



अंक 11

नवम्बर, वर्ष - 22

समापति

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

president@chaturvedimahasabha.in

सचिव

श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी

मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष

श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी

मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल

डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

पूर्व संपादक

संपादक

शशांक चतुर्वेदी

पत्र व्यवहार का पता:

'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255

गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल

(मध्यप्रदेश)

मोबा. 9826086879

ई-मेल :

sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

# चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
महासभा कार्यकारिणी	10
संपादक के नाम पत्र	11
जय माता महाविद्या	13
भारत के महान संत श्री कबीर दास जी	16
यज्ञोपवीत संस्कार	17
महासभा : सतत विकास-सतत चेष्टा के 100 वर्ष	20
भूखा आदमी और मछुआरा	21
बुढ़ापा नियामत बन सकता है बशर्ते...	22
अप्रत्याशित विषम परिस्थितियों एवं समाज	25
मानसून और आपका स्वास्थ्य	26
सर्दियां	27
कोरोना हाय! हाय !	28
चौबे जी की रसोई	29
अपील	32
शाखा समाचार	35
नवंबर माह अच्छी-बुरी घटनाओं का गवाह	37
समाज समाचार	38
शोक समाचार	38

## श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

Account No. : 1006238340

IFSC Code : CBIN0283533

Branch : Central Bank of India  
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क

1000 + 501 = 1501/-

महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-

101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।



## अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर सादर पालागन,  
पवित्र कार्तिक माह में मौसम में हल्की ठंडक की सिहरन महसूस होने लगी है। शामों को गर्म कपड़ों की आवश्यकता पड़ने लगी है। सभी घरों में दीपावली की साफ-सफाई का कार्यक्रम जोरों पर है। बच्चों की अर्धवार्षिक परीक्षाएँ खत्म हो चुकी होंगी। कोरोना का संकट भी धीरे-धीरे अपनी समाप्ति की ओर है, लेकिन अभी भी सतर्कता

आवश्यक है। दीपावली हमारे परिवारों में बहुत बड़ा त्यौहार होता है। इस अवसर पर कवि की चार लाइनें याद आती है कि

हृदय दीप में घृत भावों का,  
प्रीति की ज्योति प्रज्वलित हो !  
यश.धन और उन्नति हो प्रतिपल,  
जीवन पथ ज्योतिमय हो।  
मान मिले सम्मान मिले,  
सुख - संपत्ति का वरदान मिले।  
क्रदम क्रदम पर मिले सफलता,  
सदियों तक पहचान मिले !!

महासभा की गुल्लक योजना के अंतर्गत विगत समय में आपके घर परिवार में आयोजित मांगलिक कार्यक्रम के अवसर पर दान हेतु निकाले गए रुपयों को महासभा के खाते में हस्तांतरित करने की कृपा करें। आपका यह अंशदान महासभा की योजनाओं को सतत संचालित करने में आवश्यक रूप से सहयोगी है। दान दाताओं की सूची भी इस पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है।

भाई भरत जी (रिषड़ा) के द्वारा महासभा के 100 वर्षों का इतिहास का कार्य अपनी पूर्णतः पर है। इसके प्रकाशन के लिए आप सभी के सहयोग की आकांक्षा है। आप अपने प्रतिष्ठान व अन्य विज्ञापन यथाशीघ्र प्रदत्त सूचना में दिए नामों पर बाँधवों से संपर्क कर पहुंचाने की कृपा करें।

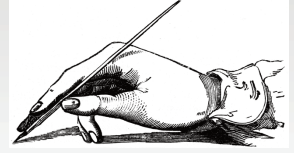
महाविद्या देवी मंदिर में पार्षद निधि से पानी की सुचारू व्यवस्था भाई राकेश जी (मथुरा) के सहयोग से की गई।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की रास्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 31 अक्टूबर 2021 को ऑनलाइन आयोजित की गई।

आपके व आपके समस्त परिवार को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं!!



### संपादकीय



मैं दीपक हूँ, प्रकाश हूँ,  
तुम मुझे विस्तार देना मित्रों.....  
अगर बुझने लगूँ तो,  
अपनी हथेलियों से प्यार देना मित्रों..  
हल्के आघात से,  
टूट या बुझ सकता हूँ मैं....  
मुझे गढ़ने वाला,  
आप मेरा कुम्हार बनना मित्रों...  
मेरी ताकत है कर्तव्यनिष्ठा और आत्मबल,  
मैं जीत जाऊँगा तुम्हारे सहारे,  
फिर चाहे कितना ही अंधकार देना मित्रों...  
यदि आखिरी साँस तक,  
लड़ पाऊँ अंधकार से मैं,  
तो सुख की रोशनी में संग बैठकर,  
मुझको थोड़ा दुलार देना मित्रों।।

शारदीय नवरात्र व शरद पूर्णिमा के विदा होते ही मौसम में ठंडक ने अपनी शक्ति दिखाना प्रारंभ कर दिया है। देश के कुछ हिस्सों में गर्म कपड़े संदूकों से बाहर निकल आये हैं व धूप खा रहे है। ऋतु परिवर्तन का यह समय सतर्कता पूर्वक स्वास्थ्य का ख्याल रखने का भी है। दीपावली का त्यौहार हम सबके जीवन में नई उमंग, उत्साह व रोशनी की रंगीन छटाएं बिखेरता है। घरों में उत्साह व उत्सव का माहौल होता है, क्योंकि इसमें अधिकतर घरों में परिजन एक जगह पर एकत्र हो त्यौहार मनाते हैं। रोजगार के कारण दूर-दराज में रह रहे बच्चे भी अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेने अपने घरों को लौटते हैं। बुजुर्गों के लिए त्यौहार के अवसर पर बच्चों का आना ही अपने आप में एक त्यौहार है। एकाकी जीवन अपने आप में अभिशाप है। सर्दियों के सुहाने मौसम में अच्छा खाना-पीना, घूमना - फिरना सबको आनंद देता है।

पत्रिका के इस अंक में श्रीमती चित्रा जी (भोपाल) द्वारा माता महाविद्या देवी, माता चर्चिका देवी पर एक शोधपूर्ण लेख दिया जा रहा है। इसी के साथ सहदेव गुरुजी (मथुरा) द्वारा उपनयन संस्कार की महत्ता, मनोज जी (लखनऊ) द्वारा महान संत परंपरा की श्रृंखला का और सोपान, स्मृति चतुर्वेदी (जयपुर) व दिलीप जी (लखनऊ) की स्वास्थ्य सलाहें व सुझाव आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसी के साथ दीपावली के अवसर पर रुषा जी (भोपाल) व शिवांगी जी (भोपाल) द्वारा चौबिन जी की रसोई में कुछ आपका मुंह मीठा करने का प्रयास किया है।

आप सबके सहयोग से चंद्रिका की लोकप्रियता सरहद के पार पहुंच गई है। पत्रिका न मिलने पर आपके कष्ट से हमको भी कष्ट होता है। आपको पत्रिका से वंचित रहना न पड़े। इसके लिए हम कुछ शहरों में अतिरिक्त पत्रिका भेजते हैं। पर यह समस्या का समाधान नहीं है। पर डाक वितरण व्यवस्था हमारे हाँथ में नहीं है। अतः समाधान के प्रयासों में आपका सहयोग आवश्यक है। अभी कुछ दिन पूर्व रजिस्टर्ड डाक से भेजी गई पत्रिका पर भी एक बांधव ने नकार दिया। डाक विभाग से जानकारी करने पर पता लगा कि पत्रिका 2 दिन पूर्व उनके घर पहुँच चुकी थी। पर उनकी जानकारी में नहीं था। ऐसा उन्होंने बताया। ऐसे ही एक अन्य उदाहरण में शहरों में बहुमंजिला इमारतों में रहने का रिवाज है। जिसमें पत्रिका या कोई भी डाक पोस्टमैन से बिल्डिंग का गार्ड या अन्य द्वारा रिसीव कर ली जाती है। वक्त की उपलब्धता पर उसे वितरित किया जाना निर्भर होता है। जानकारी करने पर उन्हें तीन माह की पत्रिका इकट्ठी प्राप्त हो गयी। इसमें आपके सहयोग की आवश्यकता है। अगले अंक से इसी तरह के कुछ खट्टे मीठे कड़वे व ज्ञानवर्धक अनुभवों से हम आपको रोमांचित करने जा रहे हैं। आपको यह अंक जरूर पसंद आएगा।

आपको सपरिवार दीपावली की अनंत मंगलकामनाएं!! सादर पालागन !!

- शशांक चतुर्वेदी

## चतुर्वेदी चन्द्रिका



# श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

**संरक्षक :** डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी (भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी “रज्जन” (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

**सभापति :** डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

**उप सभापति :** श्रीमती रुषा चतुर्वेदी, (भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)

**मंत्री :** श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)

**संयुक्त मंत्री :** श्री भरत चतुर्वेदी (रिपड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)

**कोषाध्यक्ष :** श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

**संपादक, चतुर्वेदी चन्द्रिका -** श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

**ऑडिटर -** शिव एसोसिएट, नई दिल्ली

**माननीय कार्यकारिणी सदस्य :** श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हेदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी (बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे (भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी “लालन” (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे (गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फरीदाबाद)।

**स्थाई आमंत्रित सदस्य :** श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी “अन्नी” (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हेदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

**विशेष आमंत्रित सदस्य :** श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चेतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिपड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी “पुत्तन” (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, “गुड्डू” (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, “मोहित” (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

**महिला प्रकोष्ठ :** श्रीमती रुषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

**युवा प्रकोष्ठ :** डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

**चिकित्सा प्रकोष्ठ :** डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

**आई टी प्रकोष्ठ :** श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

## संपादक के नाम पत्र

इस बार 80 पृष्ठों का भारी भरकम कविता विशेषांक प्राप्त हुआ। एक एक चुनिंदा कविता, वह भी सभी चतुर्वेदी बांधवों की प्रस्तुति, विभिन्न रसों से सराबोर। संपादक भाई शशांक जी को इस कठिन परिश्रम के लिए अनेकों बधाइयाँ, साधुवाद। आपने यह अंक तो संकलनीय बना दिया है। यद्यपि एक एक कविता अलग अलग रंग बिखेरती है और सारी कविताएँ एक साथ पढ़ लेना न तो संभव है न ही उनके साथ न्याय होगा क्योंकि सारी कविताएँ गड्डमड्ड होने की संभावना रहेगी। परन्तु श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी, आगरा द्वारा प्रस्तुत एक कविता कैकई उवाच ने तो एक बार मन को पुनः झकझोर दिया। वास्तव में सदियों से कैकई को सभी धिक्कारते चले आ रहे हैं, उसके व्यक्तित्व को कोसते चले आ रहे हैं, हमेशा हेय दृष्टि से उसे देखते, कोसते आ रहे हैं। परन्तु इसके विपरीत उनके बारे में इस दृष्टिकोण से भी सोचना तो बनता है कि नियति ने कैकई के लिए इतना महत्वपूर्ण कार्य निर्धारित किया हुआ था। कैकई अगर ऐसा न करती और राम का राज्याभिषेक तो हो गया होता तो वे शायद कभी मर्यादा पुरुषोत्तम न बन पाते, बहुत से ऋषि मुनि को राक्षसों द्वारा ग्रास बना लिया गया होता, वे सृष्टि को तहस नहस करते रहते। देवताओं ने श्री राम के राज्याभिषेक का समाचार सुन कर अपने स्वार्थवश सरस्वती जी को प्रेरित कर कैकई की जिह्वा पर बैताल कर वे कुटिल वचन कहलवा दिए। जबकि उसका दूसरा पक्ष अनदेखा हो गया कि रामायण के अनुसार कैकयी ने सीता जी को स्नेहवश विवाह पर मुँह दिखाई मैं 'कनक महल' दिया था पर उसका कोई महत्व नहीं रह गया और जब राम बनवास से लौटे तब सबसे पहले वे माँ कैकई से मिलने उनके महल में गये थे, क्यों? यह भी एक विचारणीय सत्य है। नियति/ प्रकृति के हर कार्य को सही तरह समझ पाना कितना कठिन है।

- डॉ० ऋषभ चतुर्वेदी, कमतरी/ देहरादून  
-0-

संपादक महोदय चतुर्वेदी चंद्रिका में आपके कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण हो चुका है। सभी पदाधिकारियों को बधाई। क्योंकि विषम परिस्थितियों में हमारी महासभा समाज से जुड़ी रही तथा कई कार्यक्रम जूम पर संपन्न हुए पत्रिका का भी 1 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर संपादक भाई शशांक को विशेष रूप से बधाई उन्होंने जिस खूबी से पत्रिका का संपादन किया है वह काबिले तारीफ है महासभा के सभी पदाधिकारी एवं संपादक को और अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिले ऐसी ईश्वर से कामना है वर्ष में कई विशेषांक निकले परंतु कविताओं

वाला विशेषांक उनमें विशिष्ट है क्योंकि जिन पूर्वजों को हम भूल गए थे वह सब हमें स्मरण हो आए तथा नए कवियों के बारे में हमें जानकारी प्राप्त हुई सभी को एक बार फिर से बधाई  
- भरत चतुर्वेदी, संरक्षक महासभा

-0-

शशांक भाई, आपने जो गाजियाबाद में पत्रिका शिकायत निवारण की जिम्मेदारी दी है। उसी के अनुसार मैं प्राप्त शिकायतों व आपकी सूचना पर समाज के माननीय बांधवों के पास पत्रिका देने जाता हूँ। पालागन करके फिर कोई जबाव भी नहीं देते, फोन करने पर जबाव दिया जाता है अभी मैं घर पर नहीं हूँ, पहुंच कर फोन करूंगा, फिर कोई जबाव नहीं देते, आप या संबंधित पदाधिकारी उपाय बताएं। फिर यही लोग सभापति, मंत्री जी फोन कर पत्रिका न मिलने की शिकायत भी करते हैं। कृपया मार्गदर्शन करें कि क्या किया जाए। निदान बताये।

- प्रदीप चतुर्वेदी, संजू, गाजियाबाद

-0-

भाई शशांक जी, पालागन

चतुर्वेदी चंद्रिका के कवि अंक की सफलता के लिए मन से बधाई। अपने स्वल्प कार्यकाल में जितने रुचिकर अंक आपने दिए हैं। वह आपके एकनिष्ठ परिश्रम, दूरदर्शी चिंतन और पूर्ण समर्पण का ही परिचायक है। कवि अंक सचमुच इतिहास से वर्तमान तक की हमारी साहित्यिक यात्रा का प्रतिबिंब है। मैं मानता हूँ कि अधिकतम प्रयास के बाद भी ऐसा कुछ अवश्य छूट गया हो जिसे होना चाहिए यह संभावना हमेशा बनी रहती है किंतु किसी विषय के अधिकतम भाग तक हमारी पहुंच हो जाये। यह भी परमात्मा की असीम कृपा और हमारे प्रयास की सफलता का ही प्रतीक है। हमारी यात्रा का यह आरम्भ होना चाहिए, क्योंकि हम जिस समाज में जन्में हैं। उसमें विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले हमारे पूर्वजों से लेकर वर्तमान तक असंख्य कीर्ति स्तम्भ हैं। कला, साहित्य, खेल, संगीत, शिक्षा, दर्शन, वेदांत, स्वातंत्र्य संघर्ष, ज्योतिष, शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग, नारी जागृति, राजनीति आदि आदि क्षेत्रों में हमारे लोगों ने देश दुनिया में जो पहचान बनाई है। वह हम सबके लिए गौरव का विषय है। हमारा प्रयास रहना चाहिए कि हम आने वाले दिनों में इन क्षेत्रों में भी विशेषांक लाने का प्रयास करें। इसके लिए हमें क्षेत्र विशेष के मर्मज्ञों का सहयोग चाहिए जो आप जैसा गुणी संपादक अवश्य अर्जित कर लेगा। यह मेरा विश्वास है। कोरोना संकट के बाद चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े लोगों का परामर्श आपने प्रकाशित कर यह सिद्ध किया कि देश काल

परिस्थिति पर आपकी सजग दृष्टि और संपादकीय कौशल लाजबाब है। समर्पित भाव और पूरी लगन से किया गया कार्य सदैव नए आयाम स्थापित करता है। आपकी निष्ठा और लगन का कोई जबाब नहीं। इसी तरह उच्चातउच्च सोपानों को स्पर्श करते रहें प्रभु से यही प्रार्थना है। एक बार फिर बधाई।

- डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

-0-

कवि का भावुक मन जब अपने चिन्तन को कल्पना लोक में सैर कराकर शब्दों में उकेरता है। तभी कविता का जन्म होता है। कल्पना के बिना कविता की रचना सम्भव नहीं है। अपनी कल्पना को शब्दों में अभिव्यक्त करने से कवि को आत्मिक शान्ति मिलती है। कविता विशेषांक के सम्बन्ध में चंद्रिका के सम्पादक भाई शशांक जी से पत्रिका की योजनाओं पर चर्चा के दौरान स्मरण आया कि एक बार स्व. दिनेश चन्द्र जी, मैनपुरी ने पत्र के माध्यम से बताया था कि उन्होंने 200 चतुर्वेदी कवियों का संकलन एकत्र किया है। उसी की प्रेरणा से कविता विशेषांक का सुझाव रखा। भाई शशांक जी को यह सुझाव अच्छा लगा। सभापति जी ने भी उत्साहवर्धन कर सहमति दे दी। डा. कुश जी से सम्पर्क किया तो उन्होंने प्रसन्नता के साथ पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। हिन्दी दिवस से पूर्व प्रकाशित करना निश्चित हुआ। समय - समय पर आपसी वार्तालाप इटावा, भोपाल और रिषड़ा एक साथ होता रहा और कविता विशेषांक प्रकाशित हो गया। सभापति डा. प्रदीप जी के मार्गदर्शन, डा. कुश जी के अनुभव एवं 180 कवियों का संकलन एकत्र करने में सम्पादक जी की जितनी प्रशंसा की जाय कम ही है। पं बालमुकुन्द चतुर्वेदी ने 'चतुर्वेदी समाज के संक्षिप्त इतिहास' में

जातीय कविता का इतिहास 1400 ई. से बताया है। आपने उल्लेखनीय कवियों की सूची भी पुस्तक में प्रकाशित की है।

इसे देखते हुए तीन काल खंडों में विशेषांक को विभाजित करने का विचार किया गया। गौरवशाली धरोहर में सम्वत् 1660 से आरम्भ कर महाकवि बिहारी, पं हृषीकेश जी, पं बनारसीदास जी, भैया साहब श्री नारायण जी, पं जगन्नाथ प्रसाद जी, पं शैल जी, पाण्डेय उमराव सिंह जी, आशुकवि खिलखिल जी, मधुसूदन दास जी एवं पं भोजराज जी मानव, ज्वालाप्रसाद जी, शैल जी, प्रदीप जी आदि प्रथम पंक्ति के निवर्तमान को रखा गया। स्वर्णिम काल में सर्वश्री सुरेश नीरव जी, सन्तोष जी, अभिनव जी एवं हरेशजी, महेंद्र जी आदि। जबकि उज्ज्वल भविष्य में सर्वश्री सूर्यकान्त जी, समर्थ जी, सौरभ जी एवं श्री संजय जी इत्यादि की रचनायें समाहित की गई हैं। आशा है आपको हमारा यह क्रम अच्छा लगा होगा। फिर भी यदि कोई चूक रह गई हो तो क्षमा प्रार्थी है। हमारा मानना है कि जातीय कवि संकलन अभी पूर्ण नहीं है। समाज में और भी प्रतिभायें अभी शेष हैं। जिन्हें प्रकाश में लाने को हम सतत प्रयासरत हैं। सभापति डा. प्रदीप जी, डा. कुश जी एवं सम्पादक भाई शशांक जी के मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद। जिन्होंने हमारे निवेदन पर अपनी रचनायें भेजने की कृपा की उन सभी कवि बंधुओं का भी आभार प्रकट करते हैं। कविता विशेषांक में संकलित सामग्री, आकर्षक प्रस्तुति एवं उत्कृष्ट मुद्रण से युक्त आपको कैसा लगा अवगत कराइये। इस अंक के लिए मुझे अतिथि संपादक का पद देने हेतु संपादक शशांक जी को हृदय से आभार व आशीर्वाद। पालागन

-भरत चतुर्वेदी 'अचल', रिषड़ा।

## आग्रह

महोदय, हर्ष का विषय है कि चतुर्वेदी महासभा ने अपनी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इस वर्ष महासभा अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है। कोरोना महामारी के कारण सभा वृहद समारोह तो आयोजित नहीं कर सकी है, लेकिन अपने शताब्दी वर्ष में महासभा द्वारा वर्चुअली नियमित कार्यक्रम किये जा रहे हैं। इसी सन्दर्भ में कार्यसमिति ने शताब्दी वर्ष को अक्षुण्ण बनाने हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है। स्मारिका में सभा की स्थापना से लेकर अबतक की यात्रा का पूरे लेखाजोखा के साथ ऐतिहासिक एवं कीर्ति परख आलेख भी समाहित किए जायेंगे। अतः आपसे निवेदन है कि स्मारिका में निम्न दर पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा रके नाम चैक द्वारा भुगतान कर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देने की कृपा करें। खाता विवरण

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा बचत खाता न.1006238340

आई एफ एस कोड- CBIN0283533 सेंट्रल बैंक  
ऑफ इंडिया, ब्रांच- आनंद विहार, दिल्ली  
विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/-
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/-
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/-
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/-
श्वेत श्याम चौथाई पेज	3000/-
शुभकामना चार लाइन	1100/-

**संपर्क :** डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (सभापति) 9873395001,  
भरत चतुर्वेदी (संयोजक) 7059086775, मुनीन्द्र नाथ  
चतुर्वेदी (मंत्री) 09871170559, शशांक चतुर्वेदी (संपादक)  
09826086879।

# जय माता महाविद्या

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

माँ महाविद्या के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें कई शक्तियों का समावेश है।

**दिवयोवेरताम सः मनस्विताः संकलाम ॥**

**त्रयी शक्ति ते त्रिपुरे घोरा छिन्मस्तिके च।**

देवी, अप्सरा, यक्षिणी, डाकिनी, शाकिनी और पिशाचिनी आदि में सबसे सात्विक और धर्म का मार्ग है देवी कि पूजा, साधना और प्रार्थना करना। कैलाश पर्वत के ध्यानी की अर्धांगिनी सती ने दूसरा जन्म पार्वती के रूप में लिया था। इनके दो पुत्र हैं गणेश और कार्तिकेय। माँ पार्वती अपने पूर्व जन्म में सती थी। नौ दुर्गा भी पार्वती का ही रूप है। माता सती की पूजा आराधना करना सनातन धर्म का मार्ग है।

पुराणों के अनुसार जब शिव की पत्नी सती ने दक्ष के यज्ञ में जाना चाहा। तब शिवजी ने माता को वहां जाने से मना कर दिया। इंकार पर क्रोधवश माता ने पहले काली शक्ति प्रकट की। फिर दसों दिशाओं में दस शक्तियां प्रकट कर अपनी शक्ति की झलक दिखा दी। इस अति भयंकर दृश्य को देखकर शिवजी घबरा गए और पुछा कौन हैं ये? क्रोध में सती ने कहा ये सभी मेरी शक्तियां हैं। मैं यज्ञ में जाऊंगी और अपना हिस्सा लेकर आऊंगी अथवा वहां विध्वंस करके आऊंगी। शिवजी के बार बार पूछने पर माता ने बताया ये सभी मेरे रूप हैं।

कहीं कहीं 24 विद्याओं का भी वर्णन आता है। किन्तु विश्व की प्राचीन आगम तंत्र के अनुसार दस महाविद्या की साधना का उल्लेख है। इनकी साधना दो कुलों के रूपों में की जाती है। 1) श्री कुल और 2) काली कुल।

कुछ ऋषियों ने इन्हें 3 रूप में माना है।

1) उग्र 2) सौम्य और 3) सौम्य उग्र।

उग्र में काली, छिन्न मस्ता, धूमावती और बगुलामुखी हैं। सौम्य में त्रिपुरासुंदरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और महालक्ष्मी हैं। तारा तथा भैरवी को उग्र तथा सौम्य दोनों माना गया है।

महाविद्या देवी दुर्गा के दस रूप हैं, जो अधिकांश तांत्रिक साधकों द्वारा पूजे जाते हैं। परन्तु साधारण भक्तों को भी अचूक सिद्धि प्रदान करते हैं। दस महाविद्या विभिन्न दिशाओं में वासित शक्तियां हैं। माँ दुर्गा के इन 10 महाविद्याओं की साधना करने वाला व्यक्ति सभी भौतिक सुखों को प्राप्त कर जनम-मरण से मुक्त हो जाता है। माँ को प्रसन्न करने के लिए तांत्रिक साधकों

द्वारा यह पूजा की जाती है:

1. **माता काली** : दसों महाविद्याओं में काली को प्रथम रूप माना जाता है। राक्षसों का वध करने के लिए माता ने यह रूप लिया था। सिद्धि प्राप्त करने के लिए माता के इस रूप के पूजा की जाती है। माता की पूजा करने वाला साधक एकनिष्ठ और पवित्र मन का होना चाहिए। देवताओं और दानवों के युद्ध में माँ काली ने ही देवताओं को विजय दिलवाई थी। कोलकाता, उज्जैन और गुजरात में माँ काली के जागृत और चमत्कारी मंदिर हैं। इनकी पूजा के लिए विशेष दिन शुक्रवार और अमावस्या होता है। ऐसी धारणा है जो व्यक्ति अमावस्या को काली माँ के दर्शन करता है माता उसके ऊपर से दुष्ट ग्रहों की छाया खींच लेती हैं।



2. **माँ तारा** : यह तांत्रिकों की मुख्य देवी हैं। देवी के इस रूप की आराधना करने पर आर्थिक उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। पश्चिम बंगाल के बीरभूम में तारापीठ है। इसी स्थान पर देवी तारा की उपासना महर्षि वशिष्ठ ने की थी और तमाम सिद्धियां हासिल की थी। तारा देवी का दूसरा मंदिर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में स्थित है। परेशानियों को दूर करने के कारण इन्हें माँ तारा कहते हैं।

3. **त्रिपुर सुंदरी**: इन्हें ललिता, राज राजेश्वरी और त्रिपुर सुंदरी भी कहते हैं। त्रिपुर सुंदरी की शक्तिपीठ त्रिपुरा में स्थित है। यहाँ पर माता की चार भुजा और तीन नेत्र हैं। नवरात्री में रुद्राक्ष की माला पर इनका जाप किया जाता है।

4. **भुवनेश्वरी** : पुत्र प्राप्ति के लिए माता भुवनेश्वरी की आराधना फलदायी मानी जाती है। यह शताक्षी और शाकम्भरी के नाम से भी जानी जाती हैं। इनकी आराधना से सूर्य के सामान तेज ऊर्जा की प्राप्ति होती है और जीवन में मान सम्मान मिलता है।

5. **छिन्नमस्ता** : इनका स्वरूप कटा हुआ सर और बहती हुई रक्त की तीन धाराओं से सुशोभित रहता है। इन महाविद्या की उपासना शांत मन से करने पर इनके शांत रूप के दर्शन होते हैं। और उग्र मन से उपासना करने पर उग्र रूप के दर्शन होते हैं। ये संतान प्राप्ति, दरिद्रता निवारण, काव्यशक्ति, लेखन आदि तथा कुण्डलनी जागरण के लिए भजि जाती हैं। इनका मंदिर झारखण्ड के रांची में स्थित है।

6. **भैरवी** : भैरवी की उपासना से व्यक्ति सभी प्रकार के

बंधनों से मुक्त हो जाता है। इनकी पूजा से व्यापार में लगातार वृद्धि और धन सम्पदा की प्राप्ति होती है। यह बंदी छोड़ माता भी कहलाती हैं। इन्हें षोडशी भी कहा जाता है। षोडशी को श्री विद्या भी कहा जाता है। जीवन में काम, सौभाग्य, शारीरिक सुख और आरोग्य सिद्धि के लिए इन देवी की उपासना की जाती है। षोडशी का भक्त कभी दुखी नहीं रहता।

**7. घूमावती :** माता घूमावती का कोई स्वामी नहीं है। अतः ये विधवा माता मानी जाती हैं। इनकी साधना से आत्मबल का विकास होता है। इस महाविद्या के फल से देवी सूकरी के रूप में प्रत्यक्ष प्रकट हो कर साधक के सभी रोग, अनिष्ट और शत्रुओं का नाश कर देती हैं। माँ घूमावती महाशक्ति स्वयं नियंत्रिका हैं। ऋग्वेद और रात्रिसूत्र में इन्हें सूत्रा कहा गया है। इन्हें आभाव और संकट दूर करने वाली माँ कहा गया है।

**8. बगुलामुखी :** इन माता की आराधना युद्ध में विजयी होने और शत्रु नाश के लिए की जाती है। इनकी साधना सप्तऋषियों ने समय समय पर की है। इनके साधक का जीवन निष्कंटक और लोकप्रिय हो जाता है। भारत में देवी बगुलामुखी के तीन ही मंदिर माने गए हैं जो दतिया, कांगड़ा एवं शाजापुर में हैं।

**9. मातंगी माता :** मतंग शिवजी का नाम है। शिव की यह शक्ति असुरों को मोहित करने वाली और साधकों को अभिष्ट फल देने वाली है। गृहस्थ जीवन को सफल बनाने के लिए लोग इनकी पूजा करते हैं। अक्षय तृतीया अर्थात् वैशाख शुक्ल की तृतीया पर इनकी जयंती आती है। यह श्याम वर्ण और चन्द्रमा की मस्तक पर धारण करती हैं। इनकी चार भुजाएं, चार वेद हैं। माँ मातंगी - वैदिकों की सरस्वती।

**10. कमला :** यह माता दरिद्रता, संकट, गृह कलह और अशांति को दूर करती हैं। यह माता परम सौभाग्य प्रदात्री हैं, जो जातक इनकी आराधना करता है। उसका घर यह धन-धन्य से परिपूर्ण करती हैं। कमल के पुष्प पर आसीन होने के कारण इनका नाम कमला पड़ा है। कमला यानि लक्ष्मी माता को प्रकाश प्रिय है और अंधेरे से नफरत है। यह स्वयं नारायणी हैं और भगवन विष्णु के साथ भ्रमण करती हैं। यह प्रसन्न होती हैं तो तिजोरी भर देती हैं, नाराज होती हैं तो अपनी माँ अलक्ष्मी के साथ रंक भी बना देती हैं। लक्ष्मी माँ की आराधना तीनों लोकों में दानव, दैत्य, देवता तथा मनुष्य सभी करते हैं।

**माता मंत्र :**

- 1) काली माँ: ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके स्वाहा ।
- 2) तारा माँ : ॐ ह्रीं स्त्रीं हुम फट ।
- 3) त्रिपुर सुंदरी: ॐ ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुन्दरियै नमः ।
- 4) माँ भुवनेश्वरी: ह्रीं भुवनेश्वर्यै ह्रीं नमः ।
- 5) भैरवी माँ: ह्रीं भैरवी क्लौं ह्रीं स्वाहा ।
- 6) छिन्नमस्तिका: श्रीं ह्रीं ऐं वज्रा वैरोचनिये ह्रीं फैट स्वाहा ।
- 7) माँ घूमावती : ॐ धूं धूं धूमावती देव्यै स्वाहा ।
- 8) माँ बगुलामुखी: ॐ ह्रीं बगुलामुखी देव्यै ह्रीं ॐ नमः ।
- 9) देवी मातंगी: ॐ ह्रीं ऐं भगवती मातंगेश्वरी श्रीं स्वाहा ।
- 10) माँ कमला: हसौ जगत प्रसूतये स्वाहा ।

ये चमत्कारी मंत्र सिर्फ जानकारी के लिए ही लिखे हैं। पाठक किसी जानकर से पूछकर ही दस महाविद्याओं का जाप या पूजन करें। जय माँ महाविद्या

## जय मां चर्चिका देवी

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

चर्चिका नाम का अर्थ बेहद विशिष्ट है। चर्चिका नाम का अर्थ भगवान शिव की तीसरी आँख की शक्ति होता है। ऐसी मान्यता है की यदि कोई व्यक्ति अपने बच्चे का नाम चर्चिका रखता है तो उस बच्चे का व्यक्तित्व भी चर्चिका नाम के मतलब की तरह यानी भगवान शिव की तीसरी आँख की तरह शक्तिशाली हो सकता है। जीवन में नाम और उसके मतलब का बहुत महत्व होता है। नाम का मतलब बच्चों को एक सकारात्मक प्रयास करने को प्रेरित करता है। भारतीय संस्कृति अपने आप में एक अनूठी संस्कृति है। इस संस्कृति में हमें अपने कई कुल देवी देवताओं के होने की जानकारी मिलती है। हमारा माथुर चतुर्वेदी समाज भी इन जानकारियों से अनभिज्ञ नहीं है। चौबों में माँ चर्चिका देवी को पांडों (भारद्वाज गोत्र) की देवी

मानते हैं। माँ महाविद्या देवी तो शेष सभी लोगों की हैं। माँ चर्चिका देवी को प्रणाम कर हम चर्चा करते हैं, मथुरा में विराजित माँ चर्चिका देवी की।

**1. श्री मथुरा पुरी :** चर्चिका देवी मंदिर दसवतार गली, विश्राम घाट के आगे, सती बुर्ज के निकट स्थित है। इस मंदिर को समय समय पर, खासकर त्योहारों पर विभिन्न प्रकार के फलों से सजाया जाता है। इसके निकट दशवतार का प्रसिद्ध मंदिर भी है। चर्चिका माता मंदिर में साल में कई बार सवा मन प्रसाद का भोग लगाया जाता है। पुराणों के अनुसार चर्चिका देवी का प्रादुर्भाव शिव जी के तीसरे नेत्र से हुआ है। इनका इतिहास चमत्कारिक घटनाओं से परिपूर्ण है। राजा हर्षवर्धन और इन्द्रधुम्न ने इस मंदिर में माता रानी की पूजा अर्चना की



थी। धार्मिक ग्रंथों में चर्चिका माता को शमशानवासिनी भी बताया गया है।

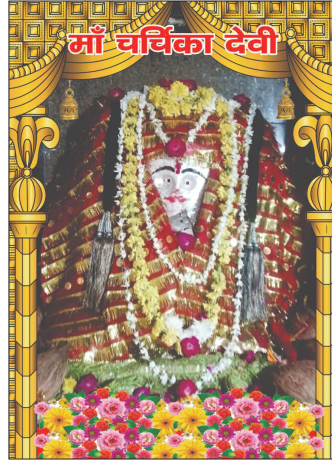
**2. चर्चिका मंदिर, उड़ीसा :** यह सबसे पुराने शाखा स्थानों में से एक है। यह उड़ीसा के कटक जिले के बंकी कस्बा में स्थित है। सिद्ध देवता एक आठ शस्त्र देवी चामुंडा हैं। जिन्हें स्थानीय रूप से माँ चर्चिका के नाम से जाना जाता है। यह एक दैत्य मानव शरीर पर बैठती हैं। मानव मुंडों की माला पहनती हैं। वह अपने चार दाहिने हाथों में खड्ग, शूल, कटारी और वरदमुद्र दिखती हैं, जबकि अपने चार बाएँ हाथों में कटे हुए सर, रक्तकंप बाँधु का प्रतिनिधित्व करते हैं और शेष हाथ एवं उँगलियाँ रक्त में डूबी रहती हैं। 19वीं शताब्दी में मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। ऐसा माना जाता है कि चर्चिका माँ की मूर्ती परशुराम ने बनायीं थी। इस मंदिर की छत लकड़ी से बनी है, जबकि खम्बे पत्थर के बने हैं। इस पूजा मंडप कि छत को बड़े पैमाने पर नक्काशीदार बनाया गया है। मंडप की लकड़ी से बनी छत को हाथियों, बतख, तोता, मोर आदि पक्षियों और जानवरों की चित्र शैली से सजाया गया है। इसके आलावा यहाँ चार सशस्त्र महिषासुर, मर्दानी दुर्गा और उत्तर पश्चिम दक्षिणी ओर क्रमशः आठ सशस्त्र चामुंडा को स्थापित किया है। ऐसी मान्यता है कि एक भक्त ने रेणुका नदी के पास माता चर्चिका कि पूजा करने के बाद उन्हें यहाँ एक मंदिर बना कर उसमें स्थापित कर दिया। उस भक्त ने देवी को स्थापित करने से

पहले उनके सभी गहने, आभूषण आदि उतार लिए थे। जिससे माता क्रुद्ध हो गयीं थीं और रेणुका में बाढ़ के कारण मंदिर का स्थान कम हो गया। यह मंदिर बंकी के दिल में स्थित है। दुर्गा पूजा (नवरात्री-दशहरा) का समय मंदिर जाने के लिए अच्छा है। अक्टूबर का महीना यहाँ घूमने और पूजा करने के लिए उपयुक्त है। दूर दराज के लोग यहाँ पूजा अर्चना और दर्शन करने आते हैं। शरद पूर्णिमा भी यहाँ प्रसिद्ध त्यौहार में से एक है।

**3. चर्चिका माँ विदिशा/भेलसा :** विजय मंदिर, विदिशा, मध्य प्रदेश में स्थित है। किले की सीमा के अंदर पश्चिम में स्थित इस मंदिर के नाम पर ही विदिशा का नाम भेलसा पड़ा। सर्वप्रथम इसका उल्लेख सन 1024 में महमूद गजनी के साथ आये विद्वान अलबरूनी ने किया है। अपने समय में यह स्थान विशाल मंदिरों में से एक माना जाता था। साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार यह आधा मील लम्बा चौड़ा था। इस मंदिर की ऊँचाई 105 गज थी। मंदिर के कलश दूर से ही दिखते हैं। यहाँ साल भर यात्रियों का तांता लगा रहता है, और साल भर माता की पूजा-अर्चना चलती है। कहा जाता है इस मंदिर का

निर्माण चालुक्य वंशी राजा कृष्ण के प्रधानमंत्री वाचस्पति ने अपनी विदिशा विजय के उपरांत किया था। नृपति के सूर्यवंशी होने के कारण मेल्लिस्वामिन (सूर्य) का मंदिर भी यहाँ बनवाया गया। इस मेल्लिस्वामिन नाम से इस जगह का नाम पहले भेलसानी और बाद में भेलसा पड़ा। यह मंदिर अपनी भव्यता और विशालता के कारण ही मुस्लिम शासकों की आँखों में खटकता रहा। कई बार उन्होंने इसे लूटा और तोड़ा परन्तु हर बार श्रद्धालु इसे बनवा कर पूजा योग्य कर देते थे।

इस स्थान के शिलालेख ज्यादातर आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिए। स्तम्भ पर मिला एक संस्कृत का अभिलेख यह स्पष्ट करता है कि यह मंदिर चर्चिका देवी का था। संभवतः इसी देवी का दूसरा नाम विजया था। जिसके नाम से इसे विजय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम बीजा मंडल के रूप में



आज भी प्रसिद्ध है। कहीं कहीं मतभेद है कि बृजभूमि तो राधा-कृष्णा कि भूमि है। यहाँ तो कृष्णा पूजा सर्वत्र है। यहाँ कृष्णा जन्म के पहले ही शक्तिपूजा आरम्भ हो चुकी थी। मुख्यतः वैष्णव धर्मावलम्बी बृजवासी, देवी कि आराधना करते हैं। भगवती दुर्गा ने सप्तशती में स्वयं कहा है नन्द गोप गृहे जाता मैं स्वयं नन्द गोप के घर में यशोदा के गर्भ से अवतार लूंगी। माता भगवती का ब्रज से जुड़ाव आत्मीय है, क्योंकि ब्रज स्वयं ही भगवती का प्रादुर्भाव स्थल है। मांगलिक कार्य में और गौर पूजा का विधान है। यह

गौर ही गौरा पार्वती हैं। चर्चिका देवी को कहीं कहीं परमारों कि कुल देवी बताया गया है। यहाँ तक कहा जाता है, विदिशा में चर्चिका माँ की मूर्ति कि स्थापना परमारों ने ही करवाई थी। अब वो मूर्ती शायद खंडित हो चुकी है। एक मान्यता के अनुसार यह देवी भगवान की भी मति फेरने कि क्षमता रखती हैं। माता चर्चिका नारी शक्ति कि प्रतिरूप हैं और यह शक्ति मात्र उनके प्रचंड चंडी के रूप में ही नहीं, मां के कोमल हृदय और पवित्रता के बहते आंसुओं के रूप में भी दिखती हैं। कुछ मतों के अनुसार चामुंडा देवी का रूप ही चर्चिका देवी हैं जो देवियाँ हमारे शरीर के विभिन्न भागों कि रक्षा करती है उनमें उल्लेख मिलता है। माँ चर्चिका देवी हमारे ओठों कि रक्षा करें। उड़ीसा के चर्चिका देवी मंदिर के बारे में यह मान्यता है कि यहाँ तंत्र-मंत्र क्रियाएं भी कि जाती हैं। मां शब्द ही अपने आप में त्याग, बलिदान और ममता से परिपूर्ण है। कभी मुसीबत का समय हो तो आप भी देवी मां को श्रद्धा से मदद के लिए पुकारें। माता आपकी मदद के लिए शीघ्र दौड़ी चली आएँगी।

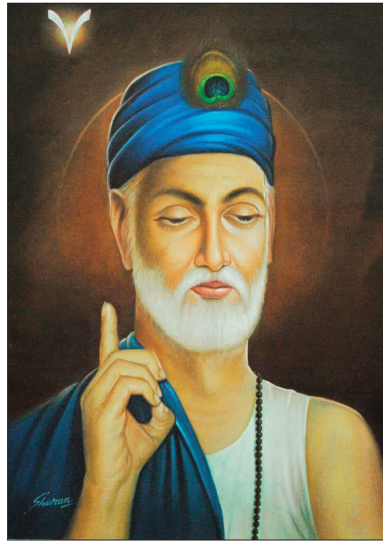
जय माँ चर्चिका देवी

# भारत के महान संत श्री कबीर दास जी

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

श्री कबीर दास जी भारत के एक महान संत थे। उनके दोहे ही उनका सत्संग थे जो उस समय में भी पूरी तरह सार्थक थे और आज भी उतने ही समयोचित। श्री कबीर के जन्म के बारे में अलग अलग मान्यताएं हैं। कुछ इतिहासकारों ने उनका जन्म 1398 बताया और कुछ ने 1440. उनका जन्म बनारस के पास लहरतारा में एक मुस्लिम परिवार में हुआ। उनके पिता नीरू और माता नीमा थे। कहते हैं कबीर का बचपन बनारस के कबीर चौरा में बीता। उनके पिता नीरू पेशे से जुलाहे थे।

कबीर के जन्म के समय उनके नामकरण के लिए एक काजी को बुलवाया गया। काजी ने कई बार कुरान शरीफ को खोला कि एक उचित नाम मिल जाय किंतु हर बार काजी को एक ही नाम मिला, कबीर। कबीर का अर्थ होता है महान, जो मुसलमानों में ईश्वर के लिए ही प्रयोग होता है। कबीर के बचपन के बारे में बहुत कम



ज्ञात है। कबीर को ना तो प्रारंभिक शिक्षा मिली ना कपड़ा बुनने का हुनर। कबीर का मन तो ईश्वर में ही रमा था। वे बनारस के एक प्रसिद्ध संत श्री रामानंद के शिष्य बनना चाहते थे। कबीर को मालूम पड़ा कि रामानंद रोज गंगा स्नान के लिए ब्रह्ममहूर्त मआते हैं तो एक दिन कबीर, घाट की सीढी पर लेट गए। रामानंद को अंधेरे में कबीर दिखाई नहीं दिए और उनका पैर कबीर से टकराया। रामानंद के मुंह से निकला राम राम। कबीर ने राम शब्द को ही मंत्र मन लिया। बाद में कबीर रामानंद के शिष्य भी बने। कबीर ने अपने जीवन में सिर्फ एक शब्द लिखना सीखा और वो था राम।

कबीर के परिवारिक जीवन के बारे में भी बहुत ज्ञात नहीं है। उनकी पत्नी का नाम लोई था। पुत्री कमाली और पुत्र कमाल। कबीर जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। एक बार कुछ ब्राह्मण अपने पापों को धोने के लिए गंगा स्नान कर रहे थे। कबीर भी वहीं स्नान कर रहे थे। उन्होंने अपने कमंडल में गंगा जल लिया और ब्राह्मणों को पीने को कहा। ब्राह्मण इस बात पर नाराज हो गए कि एक छोटी जाति का आदमी उन्हें पीने का

पानी दे रहा है। इस पर कबीर ने कहा जो गंगा मेरे लकड़ी के कमंडल को शुद्ध नहीं कर सकती वो मेरे पापों को कैसे धोएगी।

कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों की ईश्वर पूजा में कर्मकांड की घोर भर्त्सना करी। उन्होंने कहा ईश्वर को पाने का एक ही रास्ता है और वो है ईश्वर को हृदय से सम्पूर्ण समर्पण। कबीर का अध्यात्म उनके दोहों और कविताओं में दिखता है। उन्होंने मुसलमानों के लिए कहा, कांकर पाथर जोड़ के मस्जिद लई चुनाई, ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

हिंदुओं से उन्होंने कहा पत्थर पूजे जो हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़, घर की चाकी कोई ना पूजे, जाको पीस खाए संसार। कबीर के दर्शन से श्री गुरुनानक देव, अहमदाबाद के दादू महाराज और अवध के जीवनदास( सतनामी पंथ) बहुत प्रभावित थे और उनके रचनाओं में कबीर के दर्शन के साफ दर्शन होते हैं।

कबीर ने हिंदू मुस्लिम एकता पर भी बहुत जोर दिया। कबीर के शिष्यों में हिंदू और मुस्लिम दोनों ही थे। जीवन के अंतिम दिनों में कबीर बनारस के पास मगहर चले गए और वहीं उन्होंने शरीर त्यागा।

उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके हिंदू और मुस्लिम शिष्यों में झगड़ा होने लगा, दोनों ही अपने धर्म के अनुसार अंतिम संस्कार करना चाहते थे। जब उनके कफन का कपड़ा हटाया गया तो वहां सिर्फ फूल थे जो दोनों धर्मों के शिष्यों ने बांट लिए। हिंदू शिष्यों ने फूलों का बनारस में अंतिम संस्कार किया और मुसलमानों ने मगहर में दफन किया। ईश्वर ही संसार के स्वामी हैं। हम सब ईश्वर की ही संतान हैं। ईश्वर के पास सब है सिर्फ हमारे प्रेम के। ईश्वर हमसे सिर्फ हमारा निशर्त प्रेम ही चाहते हैं। ईश्वर से प्रेम का सबसे अच्छा माध्यम, उनकी सभी संतानों से स्वार्थहीन प्रेम करना है। कबीरदासजी का ये दोहा इसी बात को दोहराता है, पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया ना कोई, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

# यज्ञोपवीत संस्कार

- डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी  
साहित्याचार्य एम.ए., पीएच.डी. मथुरा

मानव जीवन का सम्बन्ध ऋषियों के साथ पितरों एवं देवशक्तियों के साथ रहता है। उन्हीं की शक्तियों से मानव विद्वान, सम्पन्न और सन्तानवान होकर सृष्टि का विस्तार करता है। हम जिसे चतुर्विध पुरुषार्थ कहते हैं और जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सफलता मिलती है। वह इन्हीं देव, ऋषि और पितृ शक्तियों पर निर्भर रहती है। इन्हीं के संवर्धन के लिये यज्ञों का विधान किया गया है। जिनके 21 प्रकार माने गये हैं।

अर्थात् 21 प्रकार के यज्ञ करने से देव, ऋषि एवं पितरों की शक्ति बढ़ती है, किन्तु इन सभी यज्ञों को करने से पूर्व यज्ञकर्ता को संस्कार सम्पन्न होने की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन्हीं सभी के द्वारा वह व्यक्ति जहाँ यज्ञ करने का अधिकारी होता है वहीं ब्रह्म प्राप्ति के योग्य शरीर का निर्माण भी करता है। माता पिता के रजोवीर्यगत दोष के कारण सन्तान में शारीरिक और मानसिक बहुत सी त्रुटियाँ रह जाती हैं। जिन्हें संस्कार के माध्यम से दूर किया जाता है। अब ये संस्कार कितने होते हैं। इसमें अलग-अलग मत प्राप्त होते हैं। गौतम धर्म सूत्र में इनकी संख्या

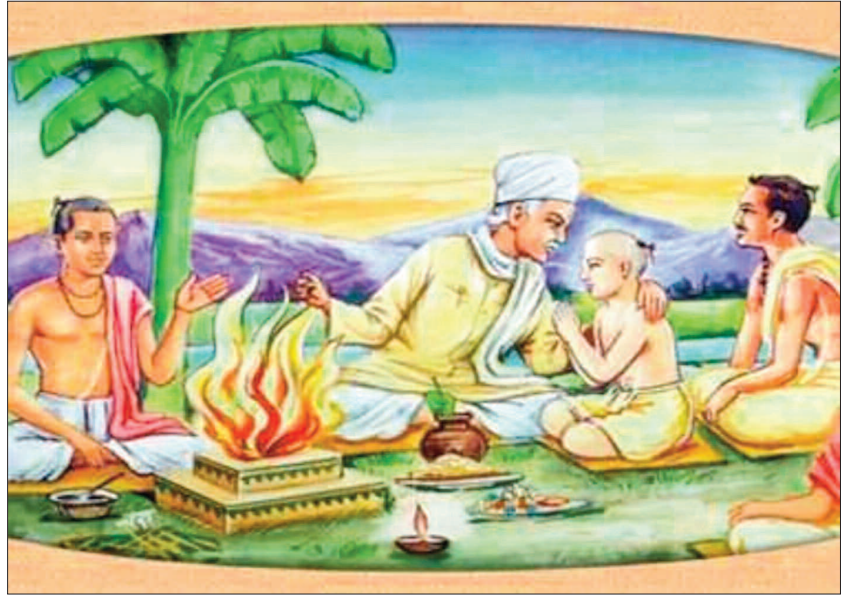
40 से 48 बताई गई है, महर्षि सुमन्त एवं अंगिरा ने 25 मानी है। किन्तु महर्षि वेदव्यास ने अपने स्मृति ग्रन्थ में 16 संस्कारों का उल्लेख किया है। यह हैं - गर्भाधान पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, आपसश्याधान तथा श्रोताधन हम यहाँ इनमें से उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत संस्कार के विषय में प्रकाश डालेंगे। गर्भाधान से लेकर कर्णवेध तक 9 संस्कार होते हैं इनमें से कुछ ही हो पाते हैं, ऐसे न हुए संस्कारों को पूर्ण करने हेतु यज्ञोपवीत संस्कार में उनके प्रायश्चित्त की आहुति आदि डाल उन्हें पूर्ण किया जाता है।

उपनयन संस्कार कोई साधारण संस्कार नहीं है। मनुस्मृतिकार ने कहा है:

उपनीते फलं चैतर् द्विजतां सिद्धिपूर्विका।  
वेदाधीत्यधिकारस्य सिद्धिऋषि भिरीरिता ॥

अर्थात् इस संस्कार के द्वारा बालक ब्राह्मण की श्रेणी में आ जाता है, एवं उसे वेद के अध्ययन का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है।

कोटि जन्मार्जितं पापं ज्ञानाज्ञानकृतं चमत



यज्ञोपवीत यात्रेण पलायन्ते न संशयः  
अर्थात् करोड़ों जन्मों के ज्ञात अज्ञात प्राप्त पाप यज्ञोपवीत धारण से नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्मणोत्पावितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणीकृतं  
रुद्रेण तु कृते ग्रन्थिः सावित्या चाभि मंत्रितम  
ब्रह्मा द्वारा निर्मित किया गया विष्णु द्वारा त्रिगुणित किया गया तथा रुद्र द्वारा इसे ग्रन्थि प्रदान की गई। .

अतः यज्ञोपवीत की पवित्रता सदैव रखनी चाहिये।

उपनयनकण करें:-

स्मृतिकारों ने उपनयन के लिये वर्णों के आधार पर अलग-अलग समय का निर्देश दिया है:

गर्भाष्टमेके कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायमम।

गर्भादेकादशे रासो गर्भान्तु द्वादशे विशक ॥

(मनु. 2.36)

अर्थात् ब्राह्मण बालक का गर्भ से 8वें वर्ष क्षत्रिय का 11वें वर्ष वैश्य का, 12वें वर्ष में करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार ब्राह्मण का 5 या 8 क्षत्रिय का 11 या 12 वैश्य का 12 या 16 वर्ष में मानते हैं। इन वर्षों का निर्धारण में भी हेतु है जैसे वसु 8 होते हैं, जो ब्राह्मणवर्णी हैं, रूद्र क्षत्रिय वर्णी हैं जो 11 हैं, तथा आदित्य जो वैश्य वर्णी हैं वे 12 हैं। इसी प्रकार इसके करने में ऋतु का भी विधान है।

वसन्ते ब्राह्मणं ग्रीष्मे राजन्यं शरदि वैश्यम अर्थात् वसन्त ऋतु ब्राह्मण के लिये, ग्रीष्म क्षत्रिय के लिये तथा शरद वैश्य के लिये श्रेष्ठ है। इस प्रकार ब्राह्मण के लिये उत्तरायण का समय श्रेष्ठ माना गया है। दक्षिणायन जो कर्क के सूर्य से लेकर धनु राशि के सूर्य तक रहते हैं वह समय ब्राह्मण के लिये उचित नहीं। माह के अनुसार यह श्रावण से पौष माह तक दक्षिणायन तथा माघ मास से आषाढ़ माह तक उत्तरायण रहता है।

### निर्माण विधि:

यज्ञोपवीत है तो सूत के धागों से बना हुआ 9 तार का एक डोरा किन्तु यह नौ तार एक विशेष निधि से बने हुए होने चाहिए तथा इसका निर्माण स्वयं करना चाहिए। अपने हाथ के परिमाण से महर्षि कात्यायन ने इसके निर्माण के संबंध में कहा है कि:- यज्ञोपवीत बनाने वाले को किसी तीर्थ, मंदिर या गोशाला में जाकर सन्ध्या वरण कर ऐसे सूत से इसका निर्माण करे जिसे किसी ब्राह्मण या ब्राह्मण कुमारी द्वारा बनाया है। इस सूत को भूः इस मन्त्र का उच्चारण कर 96 अंगुष्ठ सहित चारों उंगलियों के मूल पर लपेटे और उसे उतार कर किसी ढाक के पत्ते पर रखे दे। इसी प्रकार भुवः इस शब्द का उच्चारण कर दूसरी बार और स्वः का उच्चारण कर तीसरी बार हाथ पर लपेटे। बाद में 'आपोहिष्ठा' शनो देवी, तासवितुः इत्यादि तीन मंत्रों से जल से भिगोवे बांये हाथ में रखकर तीन बार फटकारे, फिर तीन व्याहृतियों से उसे एक वय देकर एक रूप बनाले, उन्हीं मंत्रों से विगुणित करे तथा प्रणव से ब्रह्म ग्रन्थि बनाये उसके 9 तंतुओं में ऊंकार अग्नि आदि देवताओं का क्रमशः आवाहन करे स्थापना करे।

**96 चप्पे क्यो:** 95 या 97 क्यो नहीं रसायन शास्त्र के अनुसार कार्बन के अणुओं में एक निश्चित पृथक 2 क्रम और ताप उत्पन्न करके उसे हीरा, काला सीसा तथा चारकोल में परिवर्तित कर दिया जाता है। यह तो सभी जानते हैं कि यदि 2 तोले शहद, 2 तोले मक्खन को मिला दिया जाय तो वह विष बन जाता है। कम या अधिक मिलाने से कुछ नहीं बनता। इस प्रकार हम लोक में देखते हैं कि निश्चित परिमाण ही कार्य सिद्धि का निमित्त होता है। फलतः यज्ञोपवीत में 96 चप्पों का परिमाण

सिद्धिदायक होता है। गायत्री के 24 अक्षर होते हैं, चारों वेदों में व्यास गायत्री छन्द के संपूर्ण मिलाकर 24 ग 4 त्र 96 अक्षर होते हैं। चूंकि यज्ञोपवीत ऐसा संस्कार है जिसमें किस बालक को गायत्री एवं वेद दोनों का अधिकार प्राप्त होता है इसलिये इस संख्या की दृष्टि में रखते हुए श्रुति ने 96 चप्पे वाले यज्ञोपवीत को ही धारण करने का विधान किया है।

चतुर्वेदेषु गायत्री चतुर्विगितिकाक्षरी

तस्माच्चतुर्गुणं कृत्वा ब्रह्म तन्तु मुदीरियेत (शिष्ट स्मृति)

वैदिक ऋचाओं की संख्या पंतजलि ने महाभाष्य में 1 लाख बताई है। इसमें 80 हजार कर्मकाण्ड संबंधी है। 1600 उपासना काण्ड संबंधी तथा 4 हजार ज्ञानकाण्ड संबंधी है। ब्रह्मचर्य अवस्था अर्थात् उपवीत होने के अनन्तर वानप्रस्थ पर्यन्त प्रत्येक द्विजाति कर्म और उपासना का अधिकारी होता है और चतुर्थाश्रम-सन्यास में चले जाने पर उसे ज्ञान का अधिकार मिलता है। वेद की उपर्युक्त मर्यादा के अनुसार चूंकि उपनीत होने वाले व्यक्ति को 96 हजार ऋचाओं का ही अधिकार प्राप्त होता है। अतः उस उपवीत का परिमाण भी 96 चप्पे होना युक्तिसंगत ही है। शेष 4000 ऋचाओं के स्वाध्याय का जब अधिकार प्राप्त होगा तब यज्ञोपवीत की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

### लम्बाई/मोटाई:

पृष्ठ वशे च नाम्याच धृतंपद्विन्दतमे कटिम

तद्धर्ममुपवीतं स्थान्तिलम्बं न चोच्छितम॥

जो कन्धे के उपर से आता हुआ नाभि का स्पर्श करता हुआ कटि तक पहुंचे न इससे नीचे न ऊपर। इसकी मोटाई सरसों की फली की तरह हो। उससे अधिक मोटा होगा तो यशनाशक तथा पतला होगा तो धननाशक होगा।

**तीन सूत व त्रिवृतभ्यो :** तीन की संख्या एहलौकिक अथवा पारलौकिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक सभी क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखती है। ऋग-यजु साम वेद तीन पृथ्वी अंतरिक्ष भू लोकहीन। सत्व, रज, तम गुण तीन ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रधान देवता तीन तथा यज्ञोपवीत के अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीन ही हैं। इसका अर्थ यह है कि यह ब्रह्मचारी, ग्रहस्थ एवं वानप्रस्थ तीन आश्रमों में रहते हुए धारण किया जाता है। चतुर्थ आश्रम में पहुंचने पर जब मनुष्य स्मृति ज्ञान मार्ग की ओर अग्रसर होता है तब यज्ञोपवीत का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। चूंकि

### नव तन्तु के 9 देवता:

1. ऊंकार (ब्रह्मलाभ), 2. अग्नि (तेजस्विता), 3. नाग (धैर्य), 4. चन्द्र (आह्लादकत्व), 5. पितृगण (स्नेह), 6. प्रजापति (प्रजापालन), 7. वायु (शुचित्य), 8. सूर्य (प्राणत्य), 9. सर्वदेव (सर्वगुण)।

**ब्रह्मग्रन्थि** : यह ब्रह्म सूचक होने के कारण ब्रह्म ग्रन्थि कहलाती है। प्रणव रूपी महामंत्र स्वयं समस्त वेद राशि का संक्षिप्त रूप है। उसमें विद्यमान तीनों वर्ण सत्व रज एवं तम तथा ब्रह्मा विष्णु रूद्र रूपी ब्रह्माण्ड नियामक तीनों शक्तियों के प्रतिनिधि है। इस ब्रह्मग्रन्थी के ऊपर अपने-अपने गोत्र प्रकारादि के भेद है। 1, 3 या 5 गांठ लगाने का विधान है।

**यज्ञोपवीत क्योँ** : ब्रह्मचरिण एकस्यात् स्नातकस्य द्वे बहुनिया (अश्वलायन ग्रहय सूत्र)

यज्ञोपवीते हे धामेँ श्रोते स्मर्ति च कर्मणि

तृतीयमुतरार्थे च वस्याभावे तदिष्यते (हेमाद्रि)

ब्रह्मचारी को एक स्नातक को 2 या उससे अधिक, श्रोत, स्मार्त कर्मों की निष्पत्ति के लिये 2 यज्ञोपवीत धारण करने चाहिए, चूँकि ब्रह्मचारी रहते हुए ग्रहस्थाश्रम में होने वाले काम्यकर्मों नहीं करने पड़ते। अतः ग्रहयसूत्रकारों ने उसे यज्ञवेदी पर एक ही यज्ञोपवीत धारण करने का विधान किया है। स्नातक हो जाने पर मनुष्य को सभी प्रकार के श्रोत और स्मार्त कर्मों के करने की आवश्यकता पड़ती है। अतः उभयविधि कर्मों के प्रतिनिधि स्वरूप 2 यज्ञोपवीत धारण करने का नियम है। लोग कहते हैं दूसरा यज्ञोपवीत स्त्री के हिस्से का है। इसका तात्पर्य इतना ही है कि चूँकि स्त्री के आ जाने पर समावर्तनान्तर ग्रहस्थ में प्रवेश कर लेने पर ही यह दूसरा यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। अतः लक्षणा से स्त्रीमूलक

होने के कारण इस यज्ञोपवीत को स्त्री के हिस्से का कहना अनुपयुक्त नहीं। इसके अतिरिक्त सगुण और निर्गुण भेद से उभयविध ब्रह्म को प्राप्त करने वाले होने के कारण 2 ही ब्रह्म सूत्र धारण करने चाहिए। यदि उत्तरीय वस्त्र न हो तो तीसरा यज्ञोपवीत भी धारण कर सकते हैं।

कान पर क्योँ रखते हैं:

योँ तो मानव शरीर का उपरी भाग सिर आदि ज्ञान का केन्द्र होने से पावन माना जाता है, किन्तु उसमें भी दाहिने कान को विशेष महत्व दिया गया है:-

आदित्या वसवो सत्र वायुरग्निश्च धर्मराह।

विप्रस्य दक्षिणे कर्णे नियं तिष्ठन्ति देवताः ॥

अर्थात् दाहिने हाथ में आदित्य रूद्र आदि देवताओं का निवास है। अतः जब शरीर अपावन होता है, तो पवित्रता की दृष्टि से इसे दाहिने कान पर रखने का विधान किया गया है।

**यज्ञोपवीत कब बदलें:**

सूतके मृतके सौरे चाण्डाल स्पर्शने तथा।

रजस्वला शवस्पर्शे धार्य मन्यन्नयं तदा। (नारा. संग्रह)

अर्थात् - यज्ञोपवीत के टूट जाने पर, परिवार में जन्म या मृत्यु होने पर, रजस्वला, चाण्डाल अथवा शव के स्पर्श होने पर, श्रावणी, ग्रहण पर, कान से नीचे हट जाने पर (शौच समय) अथवा यज्ञादि के समय इसे बदलना चाहिए।

### गंगा

मैं कल कल झर झर सी बहती  
मैं हूँ निर्मल पावन गंगा  
शोक नाशिनी रोग नाशिनी मोक्ष दायिनी  
मैं हूँ पतित पावनी गंगा  
मैं शिव जी की जटाओं से निकली  
मैं हूँ तरण तारिणी गंगा  
मैं कृष्णा कावेरी सरयू  
मैं ही नर्मदा मैं ही गंगा ।

क्योँ हो मुझको मलिन कर रहे  
अपने नाश का बीज बो रहे  
आखिर तुम क्योँ नहीं समझते  
मैं हूँ तुम्हारी अपनी गंगा ।

### माँ

तू है अगर साथ तो क्या ग़म है  
माँ तेरी गोद जन्मत से क्या कम है  
एक जनम तो क्या सौ जनम भी ले लूँ  
तेरी गोद जो पाऊँ

तू जो मुझको गले लगा ले  
तुझमें मैं मिल जाऊँ  
मैं कुछ बोल नहीं हूँ पाती  
कविता मेरी यह कहती है  
माँ मेरी तेरी ये प्राची, याद तुझे बहुत करती है  
लेखनी मेरी यह कविता लिखती  
पर मैं हूँ माँ बिल्कुल मौन  
बोलो न माँ तुमसे प्यारा  
इतना प्यारा है माँ कौन ?

- प्राची चतुर्वेदी, कटनी

# महासभा : सतत विकास-सतत चेष्टा के 100 वर्ष

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

समय परिवर्तनशील है, निरंतर दौड़ता रहता है। महासभा 15 मार्च 2020 को अपने 100 वर्ष पूर्ण कर चुकी है। यह हमारे देवतुल्य पूर्वजों के व्यक्तित्व, कृतित्व और समाज के लिए किये गये उनके महान योगदान व उनकी समृद्ध धरोहर पर गर्व करने का इतिहासिक, स्वर्णिम व गौरवमयी क्षण है। समाज का अर्थ है-समजन्ति जनाः यत्र अर्थात् जहां सब सम्यक प्रकार से एकत्र होकर समाज विकासार्थ कार्य करते हैं, वह समाज है। संस्कृत में कहा भी गया है- 'समाजो ब्राह्मणानाम्! हमारी संस्कृति तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिदपि दुःख भाग भवेतु' की भव्य भावना से ओतप्रोत है। भगवान् श्री कृष्ण गीता में कहते हैं - परस्पर भावयन्तः श्रेयः परमवास्यथ अर्थात् संगठित होकर उन्नति करो सबका कल्याण होगा। समाज स्वोन्नति एवं समुन्नति का प्रबल निर्दोष साधन है। अतः उसकी महत्वा सार्वभौमिक व सार्व कालिक है। प्रगति एवं भविष्य दृष्टि की प्रतिबद्धता से बंधा समाज आगे तो अपनी संस्कृति, संस्कारों व परम्पराओं के मूलाधार पर ही बढ़ता है। हमारे संत पूर्वजों ने अपने तप, स्वाध्याय व विद्वता आदि के क्षेत्र में, संख्यां में अत्याधिक न्यून होते हुए भी, सर्वाधिक ऊँचाईयों को प्राप्त किया तथा जाति बांधवों को संगठित करने, आपसी सम्पर्क बढ़ाने व एकता-समृद्धि के लिए बैठक, सभाएं, पारस्परिक चर्चा एवं जातीय पत्र के माध्यम से सतत प्रयासरत रहे। सन् 1890 में हमारी पहली जातीय पत्रिका 'चतुर्वेदी चंद्रिका' के रूप में सामने आई व इसके माध्यम से हमें सन् 1873 से हुए प्रयासों की जानकारी मिलती है। सन् 1873 और 1900 के बीच जाति को समुन्नत करने के निम्न प्रयास उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने महासभा की सोच को आगे बढ़ाने की नींव स्थापित की। 1873-श्री जगन्नाथ दास पांडे (इटावा) ने श्री दम्मी लाल मिश्र के सहयोग से मेनपुरी में तथा श्री राधारमण (इटावा) ने मथुरा में सभाएं आयोजित की। 1889 - श्री जयन्ती प्रसाद पाठक ने पं. द्वारका प्रसाद सोती की सहायता से मेनपुरी में मित्र सभा स्थापित की। 1890 - पं राधारमण (इटावा) ने 200 बांधवों के साथ मेनपुरी में तथा श्री वृदांवन जी (पिनाहट) के सभापतित्व में कोलकाता में 11 उप सभापतियों (मेनपुरी, होलीपुरा, पुरा, तालगांव, कमतरी, चन्द्रपुर, कछपुरा, तरसोखर, बटेश्वर, फरोली, जहांगीरपुर नामक गाँवों में से प्रत्येक का एक) को लेकर माथुरोन्नति सभा बनी। 1891- श्री रोशन लाल मिश्र की अध्यक्षता में मेनपुरी में सभा हुई। 1893- श्री मनोहर दास पांडे (इटावा) के प्रयासों से आगरा में अध्यनरत चतुर्वेदी विद्यार्थियों ने चतुर्वेदी एसोसिएशन की स्थापना की। 1894 में होलीपुरा व 1895 में फरुखाबाद तथा चन्द्रपुर में बड़ी सभाएं

आयोजित हुईं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सभा स्थापना के जिस प्रयास की नींव 1873 में पड़ी। उसे आगरा की विद्यार्थी सभा (1893) ने अधिक सुदृढ़ किया। इसकी बैठकें प्रतिमाह होती थीं। इसका व प्रथम वार्षिक अधिवेशन 21-10-1894 को श्री राधेलाल जी (होलीपुरा) की अध्यक्षता में हुआ। इसी वर्ष आगरा की मीना बाजार कोठी में चतुर्वेदी बोर्डिंग हाउस की स्थापना हुई। चतुर्वेदी पत्रिका के प्रकाशन की जिम्मेदारी श्री राधा कृष्ण व श्री लोकमणि दास ने ली। पत्रिका 6 वर्ष चली। सभा का द्वितीय अधिवेशन श्री दम्भीलाल जी मिश्र की अध्यक्षता में तथा पांचवा अंतिम अधिवेशन होलीपुरा में राजा जय किशन दास की अध्यक्षता में 27-12-1900 को हुआ। उन्होंने चतुर्वेदी बोर्डिंग हाउस को 40,000 रूपये की सहायता देने की घोषणा की। वर्ष 1915 में महासभा की स्थापना से सोच में सक्रियता आई और प्रथमतः माथुर हितकारणी सभा प्रस्तावित कर उसकी नियमावली श्री राधेलाल जी वकील ने बांधवों में वितरित की। इसी वर्ष समाज के विचारों व भावनाओं को मुखरता प्रदान करने वाली चतुर्वेदी मासिक पत्रिका पुनः पूर्व संपादक श्री राधा कृष्णजी के संपादन में प्रकाशित होनी लगी।

इस पत्रिका ने महासभा स्थापना के विचार को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। फलस्वरूप महासभा की स्थापना का आन्दोलन जोर पकड़ने लगा और 15-10-1915 को कुँवर परमानन्द जी पाठक की अध्यक्षता में हुए सम्मेलन में 25 स्थानों के बान्धव उपस्थित थे तथा सभा के गठन का प्रस्ताव भी पारित हुआ। इसी वर्ष 25-10-1915 को दानवीर श्री बैजनाथ जी ने संस्कृत भाषा व शास्त्रों के ज्ञान वर्धन के लिए मथुरा में माथुर चतुर्वेदी संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। 15 मार्च 1920 को वह शुभ घड़ी आ गई। जब आगरा में महासभा रजिस्टर्ड हुई व पं. राधेलाल जी वकील प्रथम आजीवन सदस्य बने। 25-26 दिसम्बर 1920 को दानवीर वैजनाथ जी की अध्यक्षता में मथुरा में महासभा का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ। महासभा की गति सदैव समताल में नहीं रही है। पिछले 100 वर्षों में अनेक बाधाओं, विवादों और स्वस्थ मत भिन्नताओं के बावजूद वह अधिकाधिक शक्ति प्राप्त करती रही है और उसकी व्यापकता में यथेष्ट विस्तार हुआ। वर्तमान में सभापति डा. प्रदीप जी के गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व में महासभा उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए सामाजिक पर्वतारोहण के शिखर पर है। डा. साहब के आव्हान पर प्रमुख समाजसेवी व कुशल प्रशासक भाई मुनीन्द्र जी, सचिव तथा वाणी की विदग्धता व नैसर्गिक प्रतिभा के धनी श्री शशांक जी पत्रिका संपादन के दायित्वों को कर्तव्य निष्ठा से निभाकर इतिहास रच रहे हैं।

## भूखा आदमी और मछुआरा

- निशीथ चतुर्वेदी, डबरा

एक बार एक मछुआरे के पास एक व्यक्ति खाने के लिए सहायता मांगने आया। उस मछुआरे ने थोड़ी देर अपने साथ चलकर सहयोग करने को कहा और बोला कि वहां से लौटकर होटल पर भरपेट भोजन कराऊंगा। आदमी भूखा था लेकिन मरता क्या न करता। साथ में चल पड़ा। मछुआरे ने नदी किनारे जाकर एक कांटा निकाला तथा उस व्यक्ति के हाथ में पकड़ा दिया। कांटा लेकर वह व्यक्ति बोला कि मुझे मछली पकड़ना नहीं आता। मछुआरे ने थोड़ी देर समझाया और साथ में बैठकर उस व्यक्ति से एक मछली पकड़वाई। इसके बाद दूसरा कांटा लेकर खुद मछली पकड़ने लगा। भाग्य ने साथ दिया उस व्यक्ति के कांटे में ज्यादा मछली फंसी। वह मछली पकड़ना सीख गया था। कुछ देर बाद मछुआरे ने कहा चलो अपनी अपनी मछली बेच दें। वह व्यक्ति चौंक गया बोला अपनी - अपनी मेरी मछलियाँ कौन सी हैं। ये तो मैं आपकी मछलियाँ ही पकड़ रहा था। तब मछुआरा बोला नहीं आज अगर मैं तुम पर दया कर

खाने को दे देता, तो कल तुम किसी और से भीख मांगते, लेकिन अब तुम मछली पकड़ना सीख गये हो। आज के बाद तुम्हें किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। अब तुम आत्मनिर्भर हो चुके हो। वह आदमी खुशी से झूम उठा बाजार जाकर मछलियाँ बेचीं। तो काफी पैसा मिला। दोनों ने जाकर एक होटल में भरपेट खाना खाया आज का बिल उस व्यक्ति ने ही चुकाया और बोला कि आज मैं बहुत खुश हूँ। आपने मुझे भिखारी बनने से बचा लिया। बचे पैसों से उसने अपने लिए कांटा, डोर तथा डलिया खरीद ली। अब वह अपनी मर्जी का मालिक था। जब मन होता जाकर मछलियाँ पकड़ता और बाजार में बेच अपना घर चलाता। धीरे धीरे उसने शादी कर ली और अपना मकान बना लिया। अब उसके पास अपनी स्वयं की नाव तथा जाल था और अपने परिवार के साथ खुशी खुशी जीवन बिता रहा था।

शिक्षा - किसी को भीख में खाना दो या न दो कमाने का हुनर सिखा दो खाना वो खुद कमाकर खा लेगा।

## ब्राह्मण होने का अर्थ

- निशीथ चतुर्वेदी, डबरा

### ब्राह्मण के नौ गुण

रिजुः तपस्वी सन्तोषी क्षमाशीलो जितेन्द्रियः।

दाता शूर दयालुश्च ब्राह्मणो नवभिर्गुणैः।।

- 1- रिजुः = सरल हो
- 2- तपस्वी = तप करनेवाला हो
- 3- सन्तोषी= मेहनत की कमाई पर सन्तुष्ट रहनेवाला हो
- 4- क्षमाशीलो= क्षमा करनेवाला हो
- 5- जितेन्द्रियः = इन्द्रियों को वश में रखनेवाला हो
- 6- दाता= दान करनेवाला हो
- 7- शूर = बहादुर हो
- 8- दयालुश्च= सब पर दया करनेवाला हो

इन नौ गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही ब्राह्मण होता है। श्री राम जी ने श्री परशुराम जी से कहा,

देव एक गुण धनुष हमारे। नौ गुण परम पुनीत तुम्हारे।

ब्राह्मण के गुण एवं कर्म- अंतरंग में ब्राह्मण वृत्ति जागते ही बहिरंग में साधु प्रवृत्ति का उभरना स्वाभाविक है। ब्राह्मण अर्थात् लिप्सा से जूझ सकने योग्य मनोबल का धनी। प्रलोभनों और दबावों का सामना करने में समर्थ। औसत भारतीय स्तर के निर्वाह में काम चलाने से संतुष्ट।

स्मृति ग्रंथों में ब्राह्मणों के मुख्य 6 कर्तव्य (षट्कर्म) बताए गए

हैं- 1. पठन, 2. पाठन, 3 यजन, 4. याजन, 5. दान, 6. प्रतिग्रह। शतपथ ब्राह्मण में ब्राह्मण के कर्तव्यों की चर्चा करते हुए उसके अधिकार इस प्रकार कहे गए हैं-

1. अर्चा 2. दान 3. अजेयता 4. अवध्यता।

ब्राह्मण के कर्तव्य इस प्रकार हैं: 1. 'ब्राह्मण्य' (वंश की पवित्रता), 2. 'प्रतिरूपचर्या' (कर्तव्यपालन) 3. 'लोकपक्ति' (लोक को प्रबुद्ध करना)

ब्राह्मण के 9 गुण : 1. सम, 2. दम, 3. तप, 4. शौच, 5. क्षमा, 6. सरलता, 7. ज्ञान, 8. विज्ञान, 9. आस्तिकता

ब्राह्मण के 16 संस्कार : 1. ऋतु स्नान, 2. गर्भाधान, 3. सुती स्नान, 4. चंद्रबल, 5. स्तन पान, 6. नामकरण, 7. जात कर्म, 8. अन्नप्राशन, 9. तांबूल भक्षणम, 10. कर्ण भेद (कान छेदना), 11. चूड़ाकर्म, 12. मुंडन, 13. अक्षर आरंभ, 14. व्रत बंद (यज्ञोपवीत), 15. विद्यारंभ और 16 विवाह। उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर हम अपना आकलन कर सकते हैं कि आज की तिथि में हम कितने प्रतिशत ब्राह्मण बचे हैं।

निवेदन - कृपया इसे अन्यथा न लें। यह केवल जागरूकता हेतु प्रयास मात्र है, ताकि हम अपने अधिकारों के साथ साथ कर्तव्यों के प्रति सतर्क हो सकें।

## अतीत के झरोखे से बुढ़ापा नियामत बन सकता है बशर्ते...

- श्री राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, आगरा



बुढ़ापे के संदर्भ में काफी समय तक द्विविधा में रहा था। बुढ़ापे को लक्ष्य करके यह सोच मेरे मन में प्रायः उथल-पुथल कर देता था कि बुढ़ापा दरअसल नियामत है, अथवा मुसीबत है। एक ओर तो गुरुजन, वरिष्ठ, परिवार जन आदि दीर्घ जीवी होने का आशीर्वाद देते थे यह क्रम अब भी जारी है। फलतः मन में यह विश्वास होने लगा था कि दीर्घायु होना एक अच्छी बात है, एक उपलब्धि है। दूसरी ओर इस प्रकार के कथन भी कानों में पड़ते रहे कि बुढ़ापा एक बीमारी है। बुढ़ापे का अर्थ है प्रत्येक रोगों का स्वाभाविक संघात और जब कालान्तर में प्रताप नारायण मिश्र का बुढ़ापा पढ़ा। तब तो बुढ़ापे के नाम से ही कान ही खड़े हो गये थे। विशेषकर उनकी इन पंक्तियों ने तो मुझे बुढ़ापे के प्रति सशंकित ही कर दिया था।

अरे बुढ़ापे, तोहे मारे हम नकियान इन।

करत घरत कछु बन तई नाही, कहाँ जाएँ और कैसे करिन।

बुढ़ापे की दुरावस्था के प्रति संकेत करने वाली महाकवि नाथजी की इन पंक्तियों ने तो दीर्घायु के प्रति ही शंकालु बना दिया था। बूढ़ी आयु होउ तुम केहि यह दीन्ह असी। किशोरावस्था में संयोगवश महाकवि आचार्य केशवदास के इस दोहे से परिचय हुआ।

केशव केशवन अस करी जस अरहू न कराया।

चंद्र वदन मृग लोचनी बाबा काहि-काहि जाय।

तब तक मनो विश्लेषण के पुरोध सिगमंड फ्रायड के विचारों का अधकलश ज्ञान प्राप्त हो चुका था। मैंने काम-कुंठा की दृष्टि से उक्त दोहे का भाष्य कर केशवदास ने यह क्यों नहीं सोचा कि मृगछाला धारण करने की उम्र में मृगनैनियाँ मेरी ओर आकर्षित होने से तो रहीं। निरापद समझकर वे यदि अपने मधुर कण्ठ से बाबा कहती हैं, क्या यह कम बात है? श्रवण का अमृत समस्त काया को ऊजस्वित बनाने की सामर्थ्य रखता है। हमारे विचार से महाकवि का उक्त कथन उनकी इसी रसिकता का द्योतक है। वृद्धावस्था सूचक श्वेत धारी केशवदास की जीवन्ता का प्रमाण है। फिर भी श्वेत को जो वृद्धावस्था की पहचान मानते हैं, तो मैं उनसे निवेदन करूंगा कि चंचल मन युक्त वृद्धावस्था को छिपाने के लिये आप खिजाब आदि द्वारा आप अपने बालों को काला रंग प्रदान करने का प्रयत्न करें। नकली और असली का फर्क सामने आ जाने की स्थिति में लोग प्रत्येक के प्रति शक की सुई घुमाते हुए इस तरह की फब्ती कस सकते हैं।

जनाब के दिल में कुछ हसरत है बाकी,

मुँह भी करेंगे काला जो दाढ़ि है स्याह की।

राजस्थान के कवि राजा सूर्यमल ने एक दिन दर्पण के आगे बैठकर श्वेत केशों को निकाल रहे थे। उनकी युवा पत्नी ने जब उन्हें ऐसा करते देखा, तो उसको हँसी आई। दर्पण में की



हँसी के प्रतिबिम्ब ने कवि को मर्यादित कर दिया। कवि हृदय ने अपनी वेदना की सहज अभिव्यक्ति कर दी-

पीपल धोका आविया बहुलै लागी खोड़।

करमिण पत्र गयंद ने कमी मुख्र मरोड़। सफेद बाल आ गए है। अन्य अनेक दोष भी आ गये है। मुझको देखकर यह कामिनी मुख्र मोड़ कर हँस रही है। कवि पत्नी भी कवयित्री थी आहत मर्म स्थल पर मरहम लगाती हुई। उसने ये पंक्तियाँ पढ़ दी हल तो घूना घोरिया पंधन घाघा पाँव। जहाँ तु वनफलां पाका पाका साँव।।

पुराने बैल और चरने के अन्यस्त पैर श्रेष्ठ होते हैं। पके हुए फल और पुरुषों से अच्छा रस प्राप्त होता है। चम्पादे की वाणी ने वसणास्त्र का काम किया। हास्य की सरिता के प्रवाह से खिन्नता बह गई।

मुझे नई दृष्टि प्राप्त हो गई। समझ में यह बात आई कि सब कुछ मानसिकता का खेल है दीर्घायु और बुढ़ापे का। बुढ़ापे के अहसास का यह परस्पर कोई संबंध नहीं होता है। यदि मन में जीवंतता एवं जीवन के प्रति उत्साह है तो हजार बुढ़ापे भी उसको बुढ़ा नहीं बना सकते हैं। केशवदास के कथन को इसी रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। रसिकप्रिय केशवदास के संदर्भित कथन में यकीनन मन की जीवंतता की अभिव्यक्ति की थी। उसमें न तो काम-कुंठा की अभिव्यक्ति थी और न वृद्धावस्था के प्रति क्षोभ था। और लीजिए अनाहूत अतिथि की भाँति बुढ़ापा आ ही धमका। एक महिला ने मुझे टोक कर कहा बाबा स्टेशन को कौन सी सड़क जाती है ? चाचा के सम्बोधन तक अच्छा लगता रहा। ताऊ, ताऊजी तक गनीमत रही। बाबा के सम्बोधन ने तो मुझे ऊपर से नीचे तक झकझोर दिया। आसमान से जमीन पर पटक दिया। मैंने संयत स्वर में उत्तर दिया माताजी, सामने होटल के बराबर वाली सड़क स्टेशन को जाती है। महिला के मुखमण्डल पर लज्जा की लालिमा खेल गई। वह चुपचाप निर्देशित दिशा की ओर चली गई।

अपनी हाजिर जवाबी को दाद देने की बजाय मेरे मन ने मेरे कान में कहा - वस्तुस्थिति को स्वीकार कर लो। अब तो ये ही सम्बोधन तेरी नियति है - बाबा, बुढ़ऊ, बुढ़े, डोकर आदि। अब उचित यही है कि तुम बुढ़ापे के इन्द्रधनुषी सम्बोधन को सौभाग्य की सूचना मानो और उस जवानी को भूल जाओ जो एक बार जाकर फिर लौटकर नहीं आती है, और उस बुढ़ापे को स्वीकार कर लो जो एक बार आने के बाद फिर लौटकर जाने का नाम नहीं लेता है। एक बार बस से उतरते समय एक वृद्ध को कुछ अधिक कठिनाई हो रही थी, क्योंकि निकास के पास एक बारात का सामान भर रहा था। आवाज आई न मालूम क्यों, ये बुढ़े लोग निकल देते है। उसकी बात पर कुछ यात्री भी शामिल हो। गये। उसने पलट कर कहा क्यों

बरखुरदार क्या जवानी में ही चले जाने का इरादा है ? वृद्ध के उत्तर का अपेक्षित प्रभाव हुआ। यात्री अब इस बार उस नवयुवक की ओर देखने लगे। युवक शालीन था। वह लपक कर आया और उसने उन वृद्ध महानुभाव से क्षमा याचना की, उन महानुभाव ने उसको आशीर्वाद दिया। क्यों बाबा कहाँ जाना है? कहकर ऑटो रिक्शा वाले ने भी उन पर बुढ़ापे की चिड़ी लगा दी।

हमारे पड़ोसी ने रिटायर होने के अगले दिन प्रातः टहलने के अवसर पर साथियों से कहा तो भाई, सरकार ने पेंशन देकर घोषणा कर दी है कि मिस्टर सिन्हा अब आप बुढ़ापे की गिरफ्त में हैं, घर बैठिए और खाइए। पर यार बैठे-बैठे खाना न तो आसान है और न हितकर है। घरवाले बूढ़ा बैल समझकर मेरे प्रति एक फिजूल से आदमी की तरह व्यवहार करेंगे और मेरे भी हाथ-पैर बेकार हो जाएँगे और एक, दो वर्ष में मैं एक निकम्मा आदमी बन जाऊँगा। सोचता हूँ क्या करूँ? सिन्हा साहब ने भोजन, भ्रमण और भजन के अलावा अपनी भौतिक उपयोगिता सिद्ध करने का तरीका यह निकाला है कि सुबह - शाम आप द्वार पर बैठकर दूध लाने वाले का इन्तजार करते हैं। और दूध लेकर घर में पहुँचा देते हैं। वह घर के अन्दर जाने वाले तथा घर से बाहर आने वाले हर व्यक्ति को टोकते हैं। अपनी समझ से तो वह मकान की चौकसी से कहते हैं, परन्तु उनकी ओर से की जाने वाली यह टोका टाक बहुत कम लोगों को पसंद थी। एक युवक ने तो फारसी साहित्य की एक लोकप्रिय कहानी सुनाकर साठ वर्ष से अधिक व्यक्ति की अवस्था को कुत्ते की मानसिकता प्राप्त स्थिति से तुलना में कर दी। कुत्ता भी आने जानेवाले हर व्यक्ति को देखकर भौंकने लगता है। कहानी की भनक सिन्हा साहब के कानों में पड़ गई। वह कही भी इसीलिए गई थी। खैर, सिन्हा साहब समझ गये कि धीचर तो सो कहत हो, बहुअन कान धरायं वाली बात है। उन्होंने आगन्तुकों से मेरे तहसील पूछना बन्द कर दिया। घर में घुसुर-पुसुर होने कर लगी कि दादा जी रिटायर क्या हुए। वह तो घर में बैठकर चौबीसों घण्टे हमारी पहरेदारी करते रहते हैं।

बहुओं ने दादा जी के खाने-पीने पर बंदिश लगा दीं। यह चीज दादा को नुकसान करेगी, यह चीज थोड़ी कर दो, दो से ज्यादा रोटियाँ मत दो। बुढ़ापा है, हाजमा भले खराब हो जाता है और विडम्बना यह है बुढ़ापे में झूठी भूख लगती है। और दादा जी उम्र भर चटोरे रहे हैं। दादा जी, सिन्हा साहब सोचने लगे कि मैं रिटायर भले ही हो गया हूँ, परन्तु थका नहीं हूँ। जो पेंशन मिलती है वह ज्यों की त्यों घर में दे देता हूँ। सिन्हा साहब सोचते रहते हैं कि मैंने बहुत भारी भूल कि जो अपने लिए अलग से बचाकर कुछ नहीं रखा। बच्चों को अच्छे से अच्छा

खिलाने, पहनाने और पढ़ाने में वित्त से अधिक व्यय कर दिया। सोचा था कि बच्चे मेरे प्रति विशेष आदरभाव रखेंगे। पर यहाँ तो सब कुछ उल्टा दिखाई देता है उनको तब बहुत निराशा हुई जब उन्होंने दोनों बेटों की बहुओं को आपसी बातचीत में यह कहते सुना कि दादा जी ने अपने बेटों के ऊपर जो कुछ खर्च किया। वह अपने संतोष के लिए अपने मन की खुशी के लिए किया। हमारे ऊपर उनका कोई एहसान नहीं होना चाहिए। विडम्बना एवं पश्चात्ताप के जीवन के साथ समझौता करना सिन्हा साहब के स्वभाव के विरुद्ध था। वह सोचने लगे, हर बीमारी का इलाज है, हर परेशानी से निकलने का रास्ता है। मेरी इस विषम स्थिति से भी छुटकारे की कोई न कोई तरकीब समझ में आनी चाहिए। अगले मास सिन्हा साहब ने पेंशन में से कुछ रुपये अपने लिए रख लिये। उन रूपयों से वह अपने भोजन की क्षति पूर्ति करने लगे तथा बच्चों के लिए टाफी, मूंगफली आदि लाने लगे। बच्चे उन्हें दिन भर घेरे रहें और कुछ बच्चे तो घर में बनने वाली विशेष खाने की वस्तुएँ मिलाकर देने लगे। बच्चों में मध्य रहते हुए सिन्हा साहब अपने बुढ़ापे को भूल गये। उन्हें बचपन याद आने लगा और उनके जीवन में नई स्फूर्ति आ गई। अब तो वह सभा सोसाइटियाँ में भी आने लगे। रविवार को सत्संग में भी शामिल होने लगे। स्थिति यह हो गई कि उन्हें यही नहीं मालूम पड़ता था कि दिन कब हुआ और कहाँ बीत गया। अब तो वह यहाँ तक कहने लगे कौन कहता है कि बुढ़ापा बीमारी है अथवा सौ बीमारियों का नाम बुढ़ापा है। उनको देखकर मुझे करांची के प्रथम नगरप्रमुख जमशेदजी का ध्यान आ गया। वह 80 वर्ष की अवस्था में अपने को 40 वर्ष का जवान बताते थे। तर्क यह था कि एक घण्टे में यदि 120 मिनट मान लिए जाए तो उम्र स्वयमेव आधी रह जाती है। भाई, सब बात मानसिकता की है। बुढ़ापा आता है आने दो- उससे आतंकित होने का नाम मत लो अथवा उसका अहसास ज्यादा मत करो। अपनी बदली हुई जीवन पद्धति को लक्ष्य करने सिन्हा अब तो यह भी कहते हुए सुने जा सकते थे कि मेरा असली बेटा तो मेरी पेंशन है।

नाम - पता मत पूछिए। हमारे बाबू जी ने अपने लिए आवश्यक धनराशि निकाल कर अपनी शेष सम्पत्ति को पुत्रों के मध्य बाँट दिया वह सपत्नीक सबसे अलग रहते हैं। उन्होंने एक नौकरानी रख ली और स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने लगे। वह नियमित आहार-विहार करते थे। न उनसे कोई भोजन में परहेज करने की बात करता था और न उनको आने-जाने पर कोई बंदिश थी। उनका जीवन प्रायः सर्वसुखमय था। उनका तो स्पष्ट कहना था। जीवन के सच्चे साथी दो हैं, काया और खाया। आप इन्हें ठीक रखिए फिर देखिए कि बुढ़ापा नियामत बन जाता है। 85 वर्ष की अवस्था में बाबूजी कूद-कूद कर

चलते हैं और बार बार एक ही बात कहते हैं। बुढ़ापे के लिए जवानी में तैयारी कर लेनी चाहिए। डा. एनीबेसेन्ट ने एक स्थान पर लिखा है कि किसी वृद्ध को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन नहीं होता है कि इस व्यक्ति ने बुढ़ापे के स्वागतार्थ कैसे और किस प्रकार तैयारी की थी।

वस्तुस्थिति यह है कि बुढ़ापा हरेक को नहीं आता है, पचास प्रतिशत से अधिक लोग पचास के आसपास भगवान को प्यारे हो जाते हैं। बुढ़ापा उनको ही आता है जो पुण्यात्मा होते हैं और जिन पर भगवान विशेष कृपा करता है। जो व्यक्ति 80 वर्ष पार कर लेता है, उसके बारे में यह तो कहा ही जा सकता है कि इसने संयमित एवं नियमित जीवन जिया होगा। एक बुजुर्गवार प्रायः कह दिया करते थे अमाँ यार, मैंने इस काया को बड़े लाड़-प्यार से रखा है। तब यह मुझे यहाँ तक ला सकी है। दीर्घायु के आशीर्वाद या जीवित शरदः शब्द के मूल में यह भाव निहित रहता है कि तुम इतने पुण्यात्मा बनो जो जीवन के सौ बसंत देख सको। हर व्यक्ति न तो पुण्यात्मा बन सकता है और न हरेक को बुढ़ापे की सुखानुभूति होती है। दुःखमय वृद्धावस्था सचमुच नरक का जीवन है, जो केवल हमारे पाप कर्म की परिणति कहा जाना चाहिए।

वृद्धावस्था हमारा संबंध तीन पीढ़ियों के साथ स्थापित कर देता है और गौरवशाली अतीत की स्मृतियों की सुखानुभूति करने का अवसर प्रदान करता है। अतीत के परप्रेक्ष्य में वर्तमान को देखने पर ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हमारा पुनर्जन्म हुआ है। सब कुछ बदला हुआ, सब कुछ नया-नया जो इस बदलाव को विकसित अवस्था के रूप में देखते हैं और बीते जमाने की शिकायत नहीं करते हैं। उनके जीवन की चाल बदल जाती है। तनाव और कलह न करने का एहसास उनसे कोसों दूर रहता है। और यदि कहीं व्यक्ति को लिखने-पढ़ने के व्यसन का वरदान प्राप्त होता है, तब तो बुढ़ापा भी वरदान बन जाता है। फिर वह यही सोचने लगता है भगवान ऐसा बुढ़ापा सबको ला। इस संदर्भ में एक चेतावनी देने अप्रासंगिकता नहीं होगी। बुढ़ापे में जारी औसान का बुलंद होना वहीं तक ठीक है। जहाँ तक औसान औसान ही रहें। बुढ़ापे में युवकोचित उत्साह ज्योंही कुछ कारगुजारी कर गुजरने की ओर ले जाता है, त्यों ही बुढ़ापे में से जवानी का जोश विदा हो जाता है। वह व्यक्ति को भटकाव की भूलभूलैयाँ में भटकने को विवश कर देता है। कतिपय वृद्ध जन अपने इस रंग के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। उनको चाहिए कि वे दर्पण में मुँह देखना बंद कर दें, क्योंकि वृद्धावस्था की यह विशेषता है कि वह वृद्धावस्था में व्यक्ति को किष्किंधा पुरी के निवासी की शकल सूरत प्रदान कर देती है।

(साभार चतुर्वेदी चन्द्रिका जुलाई 2002 अंक)

## अप्रत्याशित विषम परिस्थितियाँ एवं समाज

- अभय राज चतुर्वेदी, गुरुग्राम

गर्व का विषय है कि हमारे समाज के कई युवा देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न उच्च पदों पर आसीन हैं और परिवार सहित उस शहर में बस भी गए हैं। वहीं दूसरी तरफ उच्च शिक्षा हेतु भी कुछ युवा दूसरे शहरों में पहुँचते हैं और वहाँ रहने भी लगते हैं। मगर दुर्भाग्यवश या तो बढ़ते एकल पारिवारिक चलन की वजह से या अभिमानवश या किन्हीं अज्ञाने कारणोंवश वो परदेश में भी एकल एवं (आरक्षित) रिजर्व स्वभाव दर्शाते हुए स्थानीय बान्धवों के सम्पर्क में रहना पसन्द नहीं करते और शायद उनके अभिभावक भी उन्हें स्थानीय बान्धवों/ सभा के सम्पर्क में रहने हेतु प्रेरित या मार्गदर्शन नहीं देते। स्थानीय शाखा हमेशा अपने समाज से समय-समय पर हमेशा अनुरोध करता आ रहा है कि समाज आपका परिवार ही है इस से जुड़ें। पर कुछ लोग नहीं जुड़ पाते। लेकिन जब भी अप्रत्याशित विषम परिस्थितियों से सामना होता है। तब उस समय उन्हीं सदस्यों को ओर उनके परिजनों द्वारा स्थानीय सामाजिक बान्धवों को ढूँढते नज़र आते हैं, कि कोई बान्धव मिल जाये और वो जब पूँछता है कि अमुक (विषम परिस्थितियों में फंसा) व्यक्ति कहाँ और कब से रहते हैं तो ज्ञात होता है कि वो उस शहर में कई साल से रहते हैं। मगर उनके स्वभाव कुछ ऐसा ही है वो किसी से मिलते जुलते नहीं या सीमित संपर्कों वाले स्वभाव के हैं,

निश्चय ही यह प्रत्युत्तर हास्यास्पद लगता है।

इसी के विपरीत कुछ मामले ऐसे भी जानने को मिले हैं जिनमें स्थानीय लोग या तो खुद भी मिलने से कतराते हैं या इतनी घुसपैठ करने लगते हैं जिससे लोग मिलने से कतराने लगते हैं। ऐसी परिस्थितियों में एक स्वाभाविक सा प्रश्न ज़हन में उठता है कि जब व्यक्ति विशेष इतने ही समर्थ हैं कि सामान्य जीवन में उन्हें समाज पसन्द नहीं तो विषम परिस्थितियों में समाज याद आने का कारण समझ से परे है। किसी भी परिस्थिति में विवेक से कार्य करना महत्वपूर्ण है।

क्या ऐसी परिस्थितियों को टालने का प्रयास हम करना चाहते हैं? यदि हाँ तो परदेश में जब हम अपने किसी भी परिजन को भेजते हैं उस वक़्त ही हम उन्हें स्थानीय बान्धवों के सम्पर्क में या स्थानीय सामाजिक सभाओं के सम्पर्क में आने के लिये प्रेरित अवश्य करें और इसी के उलट स्थानीय बांधव इस तरह की स्थिति न उत्पन्न करें जो संकोच पैदा करे मदद मांगने में या मिलने में। परदेश पहुँचे व्यक्ति और उस के परिवार की यह समाजिक जिम्मेवारी है कि वह स्थानीय सामाजिक लोगों के सम्पर्क में पहुँचें। हवा बाजी से नहीं धरातल पर इस विषय पर गम्भीरता से मंथन होना चाहिए। विचारणीय प्रश्न है इस पर खुल के विचार होना चाहिए। जब जुड़ेंगे तभी बढ़ेंगे।

## जरा हट के, ख्याल रखें...

- सुचित्रा सिकंदरपुरिया, लखनऊ

- 1.. फ्रिजर में थोड़ा नमक छिड़क दें, आइस ट्रे फ्रिजर की सतह से नहीं चिपकेगी।
- 2.. कांच के बर्तन चमकाने के लिए कपड़े वाला नील पानी में मिलाकर धोएं।
- 3.. खिड़कियों के शीशे चमकाने के लिए चाय बनाने के बाद बची चाय पत्ती को फिर से पानी में उबालकर उससे रगड़ कर साफ़ करें।
- 4.. चांदी के साथ कपूर रखने से चांदी काली नहीं पड़ती, चांदी को कोलगेट दन्त पाउडर से रगड़ कर साफ़ कर सकते हैं।
- 5.. माइक्रोवेव को भी कोलगेट दंत पाउडर पर छिड़क कर सूखे कपड़े से पोंछ कर साफ़ कर सकते हैं।
- 6.. आलू को उबालते समय कुकर में थोड़ा विनिगर डालने से आलू जल्दी पकेंगे।
- 7.. डोसा का घोल बनाते समय थोड़ा सा मैथी दाना डालने से डोसा क्रिस्पी बनेगा।
- 8.. बेसन के पकोड़े बनाते समय घोल में थोड़ा अचार मसाला डालने से पकोड़े स्वादिष्ट बनेंगे।
- 9.. मुलायम दही बड़े बनाने के लिए घोल में थोड़ा मैदा मिला लें।
- 10.. यदि आप दही की रिसिपी बना रहीं हैं तो फ्रिज से निकाल कर सीधे ठंडी दही का इस्तेमाल न करें, दही को पहले सामान्य तापमान पर कर लें।
- 11.. दही की रिसिपी को मध्यम आंच पर पकाएं, अपनी डिश में दही को अंत में डालने का प्रयास करें।
- 12.. यदि दही को गाढ़ा करना हो तो उसमें थोड़ा मिल्क पाउडर मिला लें।

# मानसून और आपका स्वास्थ्य

- श्रीमती स्मृति चतुर्वेदी, जयपुर

हम सब जानते हैं कि बदलता मौसम हमारे स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। जरा सी भी लापरवाही हमें बारिश के मजे से दूर कर संक्रमण रोगों का शिकार बना सकती है। इसी लिए कहा गया है कि बचाव इलाज से बेहतर है।

## मानसून में रोगों के कारण

- 1) तले व बाज़ार में बने भोजन का अधिक सेवन।
- 2) पके व कच्चे भोजन को देर तक फ्रिज से बाहर छोड़ना
- 3) दालों को धूप न दिखाना।
- 4) नमी वाले भोजन पदार्थ संक्रमण के केन्द्र बिन्दु होते हैं। जैसे दालों में फन्गस आदि।
- 5) व्यायाम में कमी
- 6) रात को देर तक जागना।
- 7) धूप का कमरों में न आना।
- 8) मानसिक तनाव का होना।

**नतीजा** - : आपके पाचनतंत्र का कमज़ोर पड़ना व आपके मेटाबोलिजम पर ग़लत असर पड़ना।

**लक्षण** - : संक्रमण होने पर अमाशय में दर्द, जी मिचलाना, वमन होना, एसीडिटी, पेट में भारीपन, गैस होना आदि। भारी संक्रमण में ज्वर भी हो सकता है। टायफाइड भी एक संक्रमण ज्वर है जो दूषित पीने के पानी और दूध आदि से होता है।

## कुछ रोगों से सावधानियाँ

**1) अपचय:** भोजन को अच्छी तरह से चबाकर ही खायें। देर रात को भोजन न करें। अपने पाचनतंत्र को उसका कार्य करने का समय दें। कम से कम 6 से 8 घण्टे की नींद लें। व्यायाम को अपनी ज़िन्दगी का अहम हिस्सा बनाएँ

**2) डायरिया:** पानी व तरल पदार्थों को प्राथमिकता दें। उदाहरण के तौर पर जैसे घर की बनी ताज़ी छाछ, नींबू पानी, नारियल पानी, एलोवेरा का रस, खीरे का रस, ग्रीन टी एवं अन्य दिन में 3 बड़े भोजन की जगह 4 से 5 बार छोटी मात्रा में भोजन करें ( इन्सुलिन लेने वालों को छोड़कर)। अत्याधिक मिठाई व मैदे से बने पदार्थों के सेवन से बचें।

भोजन को कम मसालेदार रखें। यदि ज्वर है तो उबला पानी, बिना मसाले वाला भोजन, सामान्य से अधिक कैलोरीज व आसानी से पचने वाले प्रोटीन एवं विटामिन युक्त भोजन का

सेवन अवश्य करें।

**3) मधुमेह:** बारिश के पानी से होने वाले संक्रमण से अपने पैरों को बचाएँ। दलिया, ओट्स, दालें, सुयोजित आहार व व्यायाम को प्राथमिकता दें। ग्वारफली, मैथीदाना, करेले, मुनगा आदि को अपने भोजन में शामिल करें। अपनी दवाइयों अपने साथ रखें। हाइपोग्लायसीमिया से बचें।

**4) गठिया:** प्यूरिन युक्त अधिक प्रोटीन वाले भोजन का सेवन कम करें। कम से कम 10 से 12 गिलास पानी जरूर पिएँ। माँसाहारी भोजन से बचें।

**5) हृदय रोग व हायपरटेंशन:** नमक, घी व तेल से बने



भोजन पर अंकुश लगाएँ। रात को गरिष्ठ भोजन न करें। बेसन, राजमा, छोले आदि जैसे भोजन से परहेज करें। एच. डी.एल को बढ़ाने के लिए व्यायाम व आहार पर ज़ोर दें व मानसिक तनाव से बचें। म्यूफा (एसैन्शियल फैटी एसिड्स) को आहार में शामिल करें। फ्लैक्स सीड्स का सेवन भी कर सकते हैं।

## अन्य भोजन व सफ़ाई सम्बन्धी हिदायतें

अपने वज़न को नियन्त्रण में रखें। यदि सम्भव हो तो दालों में नीम के पत्ते भी डाल सकते हैं। यदि वॉक पर नहीं जा सकते हैं तो घर पर ही व्यायाम करें। घर में पानी को जमा न होने दें एवं कूलर की नियमित सफ़ाई करें। सैनीटाइजर का इस्तेमाल अपनी रसोई में भी करें। घर पर बना भोजन 3 घण्टे से अधिक बाहर न छोड़ें व उसे फ्रिज में रखें। विटामिन सी और विटामिन ए वाले भोजन को प्राथमिकता दें। मनुष्य जीवन की है विडंबना है कि पहले हम स्वास्थ्य खोते हैं फिर उसी सेहत को बचाने के लिए धन लगाते हैं। उपरोक्त उपायों को अपनाने से इस विडंबना से बच सकते हैं।

# सर्दियां

-दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

दशहरा एवं दीवाली पर्व के साथ ही सर्दी की सुगबुगाहट होने लगती हैं। सर्दियों के सुहाने मौसम में अच्छा खाना-पीना, घूमना-फिरना सबको आनंद देता है। प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. भुवन कुमार के अनुसार सर्दियों में ठंड के साथ ही खुश्की बढ़ने के कारण त्वचा रूखी एवं बेजान होने पर चुनचुनाहट, खुजली, सूजन की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। मौसम की ठंडी एवं खुश्क हवाओं के कारण पानी की कमी से त्वचा की कुदरती नमी की कमी होने लगती है। ताजा मलाई, ग्लिसरीन व नारियल तेल की मालिश रूखापन दूर करते हैं।

ठंडी हवाओं के कारण कुछ लोगों के हाथ-पैर के साथ ही शरीर पर सूजन आ जाती है, दरअसल सर्दी से शरीर का रक्त संचार में असंतुलन होने से शरीर में सूजन आ जाती है। इसके लिए सोने से पहले गर्म पानी में 15-20 मिनट पैर डालकर सरसों तेल मालिश करने से आराम मिलेगा। सप्ताह में एक बार धूप में बैठकर नारियल, सरसों या आलिव आयल से मालिश करने से शरीर स्वस्थ बनता है।

सर्दियों में रूखी त्वचा एवं खुजली का बड़ा कारण ऊनी इनरवियर भी हो सकते हैं, इसके लिए कुछ समय इनरवियर से दूर रहें एवं ग्लिसरीन युक्त साबुन से गुनगुने पानी से स्नान कर अच्छे बांडी लोशन व तेल का इस्तेमाल करें। त्वचा संबंधी तकलीफ में एग्जिमा अधिक पीड़ादायक होती है। इसके लिए कच्चे दूध में सूती कपड़ा भिगोकर घायल जगह पर आधा घंटा रखें, ऐसा लगातार एक सप्ताह करने पर आराम मिलने लगता है। स्वस्थ त्वचा के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार दूध से स्नान करें, इसके लिए एक बाल्टी गुनगुने पानी में 250 ग्राम कच्चा दूध के साथ आधा चम्मच बादाम या आलिव आयल मिला लें। स्नान के बाद वर्जिन कोकोनट ऑयल लगाए।



सर्दियों में त्वचा रोग के साथ ही जुकाम, बुखार एवं फ्लू या इंप्लूएनजा का भी प्रकोप बढ़ जाता है। इसके लिए स्वस्थ दिनचर्या, उचित खान-पान के साथ व्यायाम के नियमित अभ्यास से रोगों से बचा जा सकता है। यदि स्वास्थ्य देखभाल की जरूरत महसूस हो तो तुरंत डॉक्टर से परामर्श कर लेना चाहिए। सर्दियों में सांस रोग में भी तकलीफ बढ़ जाती है। इसके लिए आवश्यक सावधानी बरतने के साथ ही नियमित उपचार विधि का पालन करते रहे।

सर्दियों में स्वस्थ रहने के लिए नियमित योग एवं व्यायाम, सुबह दस मिनट धूप का सेवन के साथ ही गुनगुने पानी स्नान से पहले नाभि व नासिका में सरसों तेल अवश्य लगाएं। दिनचर्या से पूर्व पांच मिनट ईश्वर ध्यान अवश्य करें। खान-पान में मौसमी ताजे फल, मेवा, हरी सब्जियां, दूध के साथ घरेलू भोजन उचित समय पर करें। फास्ट फूड एवं तले-भुने पदार्थों को खाने से दूर रहें। दिन में कम से कम दो लीटर पानी अवश्य पिएं। यदि फिर भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो तो डाक्टर से तुरंत परामर्श लेना चाहिए।

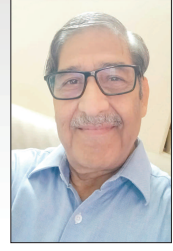
## 'होली जयंती'

- स्व. रामकुमार चतुर्वेदी, होलीपुरा

गाते हैं आज हम वीर होली का यश,  
सब के हृदय में नंद आनंद बहाते हैं।  
बहाते हैं मन में हम ऐसी लहर आनंद की,  
यश की पताका ग्राम माँहि फहराते हैं।

लाते हैं मन में सुख स्वर्ग की कल्पना,  
सुखद अतीत-सुध-सिंधु में समाते हैं।  
पाते हैं हृदय प्रफुल्ल 'अनिल' आज सब,  
हर्ष उन्मत्त हो जयंती मनाते हैं।

# कोरोना हाय ! हाय !



- अरविंद चतुर्वेदी, गाजियाबाद

1. कोरोना हाय! हाय!  
अनसर्टेन है जिन्दगी, अक्सर देती shock  
कोरोना के पंच से हुई जिन्दगी लौक  
हुई जिन्दगी लौक, पड़ा मुश्किल पाला  
हुए मार्केट बंद, लगा ऑफिस में ताला,  
ऑर्डर सरकारी हुआ, लगे शोक पर बैन  
सैर सपाटा बंद है, लाईफ अनसर्टेन

सड़कों पर कर्फ्यू लगा, गोरमिट की फोर्स  
एंटरटेनमेंट का बचा कहीं न कोई सोर्स  
कहीं न कोई सोर्स, उभरते नए क्वेश्चन  
टाइम पास करेंगे कैसे, नया टेनसन,  
ब्लड प्रेसर डाउन हुए, नये लग गये रोग  
राऊंड राऊंड घूमते घर के अंदर लोग।

बच्चे बूढ़े एक से, एक्शन सबके same  
लूडो पापूलर हुआ, बना नेशनल गेम  
बना नेशनल गेम, न घर में बाई, माई  
साहिब जी ने ट्रेनिंग लेकर चाय बनाई  
लिए हाथ में झाड़ू, दीखे बाँस दिखाई  
होम वर्क की एक नई डेफिनिशन पाई।

कोरोना का वायरस, है चीनी सौगात  
पी एम जी मेसेज करे, करते मन की बात  
करते मन की बात, चीन पर बैन लगाया  
मोबाइल से टिक टोक को गायब पाया,  
Don't वरी ये ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा  
चाइनीज की गारंटी क्या, नहीं टिकेगा

सैलून सब बंद थीं, बंद हुई सब शॉप  
ब्यूटी पार्लर पर लगा सरकारी स्टॉप  
सरकारी स्टॉप, की बबली जी फरमाएं

बिना पार्लर गए, फेस किसको दिखलाएं?  
मिस्टर कोरोना ने ऐसी आफत ढाई  
बिना पार्लर बबली के मूँछें उग आई

अनलॉकिंग जब से हुई, दिल को आया चैन,  
परमिशन हासिल हुआ, whatever you can  
What ever you can, नहीं मनमाना होगा,  
बाहर जब भी निकलो मास्क लगाना होगा।  
बबली कहने लगी, मास्क with जीना kaise?  
चेहरा दिखता नहीं, लड़ेंगे नैना कैसे ?

मास्क लगा कर सब चलें, कहती है सरकार,  
बबली जैसों के लिए, मेक अप है बेकार  
मेक अप है बेकार, लिपिस्टिक नजर न आए?  
लेकिन मन कैसे समझाऊं बिना लगाएं?  
फेस बंद है, चेहरा देता नहीं दिखाई  
सेल्फी लेंगे कैसे, बड़ी मुसीबत आई।

ट्रेनें, फ्लाईट बंद हैं, ट्रेवल है दुश्वार,  
उद्घाटन होते नहीं मंत्री जी लाचार  
मंत्री जी लाचार, कि सोशल डिस्टेंसिंग है,  
माल, सिनेमा, कॉलेज तक में भी फेंसिंग है.  
मोबाइल पर इंटरनेट की आई आंधी,  
बहनों ने भी नेट चलाकर राखी बांधी।

पब्लिक फंक्शन बंद है, क्राउड पर है रोक  
कवि सम्मेलन भी रुके, कवियों को है शोक,  
कवियों को है शोक, मंच तैयार नहीं है  
स्वागत, माला फूल, गिफ्ट, उपहार नहीं हैं।  
टेक्नोलॉजी लाई है देखो नया प्रयोग  
फेस बुक, यू ट्यूब पर कविता सुनते लोग।

### स्वास्थ्य वर्धक काढ़ा

- शिवांगी चतुर्वेदी, भोपाल

केवल 5 मिनट में कितना भी पुराना जुकाम, कफ, खांसी हो, आप एक गिलास काढ़ा पीकर, इससे छुटकारा पा सकते हैं। बहुत ही पुराने जमाने का फायदेमंद काढ़ा है जो मैं आपको आज बताने जा रही हूँ। सबसे पहले एक पैन में दो गिलास पानी उबलने रख दीजिये, इसमें हम दो तेजपत्ता डालेंगे। इसमें दो 3 इंच अदरक के टुकड़े को कूट कर इस में डाल दें क्योंकि इससे अदरक का रस निकल कर अच्छी तरह पानी में घुल जाता है और अदरक हम जानते हैं बहुत ही सर्दी खांसी में फायदा करती है। इसमें 4 से 5 लोंग को भी डाल लेंगे, जो लोंग होती है वह हमारे सीने में जो बलगम जमा हो जाता है उसको निकालने में मदद करती है। इसमें हम आधा चम्मच दालचीनी पाउडर मिलाएंगे, यह दालचीनी हम को सर्दी खांसी के साथ जो बुखार आता है उसको कम करने में बहुत फायदा करती है, इसमें हम आधा छोटी चम्मच हल्दी मिला देंगे, फिर इसमें हम एक चम्मच अजवाइन डालेंगे, फिर हम करीब आधा चम्मच काली मिर्च ऐड करेंगे, काली मिर्च हमको बुखार से बचाती है, सर्दी खांसी में आराम देती है, फिर इसमें हम आधा चम्मच काला नमक ऐड करेंगे, क्योंकि काला नमक में पोटेशियम, कैल्शियम होता है जो हमें सर्दी खांसी में आराम देता है। आप थोड़ा सा गुड़ भी ऐड करेंगे, यदि हमारे पास पुराना गुड़ रखा है, तो हम वह भी डाल सकते हैं और अगर यदि नया है तो हम वह भी डाल सकते हैं। अब इसमें हम 8 से 10 तुलसी के पत्ते ऐड करेंगे और तुलसी जी के पत्तों में तो इतनी सारी मेडिकल प्रॉपर्टीज है कि यदि हम उसका फायदा गिनाना शुरू करें तो शायद हमारे पास पन्ने कम हो जाएंगे, तो हम इसमें 8 से 10 तुलसा जी के पत्ते मिला देंगे। अब हम इसको उबलने रख देंगे, अगर हमने दो गिलास पानी रखा था तो हमें उसे एक गिलास पानी तक उबलने देना है और जब एक गिलास पानी रह जाएगा तो हम उसे छानकर निकाल लेंगे और उसको धीरे-धीरे गर्म ही हमें पीना है तभी वह हमको फायदा करेगा। सर्दियों में तो यह काढ़ा बहुत ही फायदा करता है। सर्दियों में तो हम इस काढ़ा को तीन से चार बार पी सकते हैं पर गर्मियों में हमें इसे दो ही बार लेना है। और इसका स्वाद भी बहुत अच्छा होता है, बच्चों को भी यह बहुत अच्छा लगता है।



### प्रोटीन सलाद

- शिवांगी चतुर्वेदी, भोपाल

**सामग्री :** 2 छोटे खीरा, 8-10 चेरी टमाटर,

1 बड़ा चम्मच खाना पकाने का तेल,

1 कटोरी छोले (पका सकते हैं),

1/4 छोटा चम्मच नमक,

1/2 छोटा चम्मच लाल मिर्च,

1/2 छोटा चम्मच अदरक,

3 बड़े चम्मच ताजा धनिया,

2 हरी मिर्च,

1/4 छोटा चम्मच भुना जीरा,

1/4 चम्मच चाट मसाला,

1/4 छोटा चम्मच काला नमक,

2 बड़े चम्मच नीबू का रस,

1/4 टी-स्पून काली मिर्च,

1 टी-स्पून खाना पकाने का तेल।

**निर्देश:** 1. खीरा, चेरी टमाटर काट लें

2. एक पैन में खाना पकाने का तेल डालें और पके हुए छोले डालें।

3. स्वादानुसार नमक और लाल मिर्च डालें।

4. मध्यम तेज आंच पर 2-3 मिनट के लिए भूनें।

5. छोले को आंच से उतारें और खीरे के साथ प्याले में निकाल लें 6. ताजा अदरक, हरा धनिया और हरी मिर्च मिलाएं।

7. भुना जीरा, काला नमक, खाना पकाने का तेल, नीबू का रस डालें और स्वादानुसार एक चुटकी नमक और काली मिर्च।

**सामग्री :** 2 छोटे खीरा

8-10 चेरी टमाटर

1 बड़ा चम्मच खाना पकाने का तेल

1 कटोरी छोले (पका सकते हैं) 1/4 छोटा चम्मच नमक

छोटा चम्मच लाल मिर्च

छोटा चम्मच अदरक

3 बड़े चम्मच ताजा धनिया

2 हरी मिर्च

1/4 छोटा चम्मच भुना जीरा

1/4 चम्मच चाट मसाला

1/4 छोटा चम्मच काला नमक

2 बड़े चम्मच नीबू का रस

1/4 टी-स्पून काली मिर्च

1 टी-स्पून खाना पकाने का तेल

**निर्देश:** 1. खीरा, चेरी टमाटर काट लें

2. एक पैन में खाना पकाने का तेल डालें और पके हुए छोले डालें।

3. स्वादानुसार नमक और लाल मिर्च डालें।

4. मध्यम तेज आंच पर 2-3 मिनट के लिए भूनें।

5. छोले को आंच से उतारें और खीरे के साथ प्याले में निकाल लें 6. ताजा अदरक, हरा धनिया और हरी मिर्च मिलाएं।

7. भुना जीरा, काला नमक, खाना पकाने का तेल, नींबू का रस डालें और स्वादानुसार एक चुटकी नमक और काली मिर्च।

\*\*\*

### मूंग की दाल के लड्डू

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

बहनों, बाजार की मिठाइयां इस समय खाना अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है क्यों ना हम अपने घर पर ही मिठाई बनाएं अपने परिवार वालों को खिलाएं उसमें जो प्रेम और इसने होगा वह बाजार की मिठाई में नहीं आज हम आपको बताते हैं मूंग की दाल के लड्डू एकदम सरल तरीका।

**सामग्री :** 1 कटोरी मूंग की धुली दाल । दाल भिगोना नहीं है सुखी रहेगी।



शक्कर आधी कटोरी से थोड़ी ज्यादा जिस कटोरी से दाल ले उसी कटोरी से शक्कर।

देसी घी आवश्यकतानुसार सूखी कटी हुई मेवा बारीक नारियल का बुरादा

**विधि :** सबसे पहले हमारे पास जो दाल है उस दाल को कढ़ाई में

डालकर भूनेगे। घी नहीं डालना ऐसा ही सूखा भूना है। जब वह सुनहरी हो जाए तब गैस बंद कर दें और दाल को निकाल कर ठंडा होने रख दें। हमारे पास जो शक्कर है उसे हम मिक्सी में पीस लें। तथा मेवा को बहुत बारीक बारीक काट लें। हमारी दाल जब तक ठंडी हो गई होगी उसे हम मिक्सी में पीस लें दाल बारीक पीसें दरदरीनहीं अब कढ़ाई में देसी घी डाले तथा साथ में पिसी हुई दाल का आटा दोनों को सुनहरा होने तक भूनें बहनों ध्यान रखना गैस को सिम रखें जब वह खुशबू देने लगे और गुलाबी गुलाबी हो जाए तब गैस बंद कर दें तथा एक थाली में निकाल ले और उसे ठंडा होने दें ठंडा होने के बाद उसमें पिसी हुई शक्कर थोड़ा सा नारियल का बुरादा तथा कटी

हुई मेवा मिला दे यदि आपकोघी कम लग रहा हो तो थोड़ा सा घी गर्म करके डाल सकते हैं आटा और शक्कर को अच्छी तरह से हाथ से मिला ले तथा उनके लड्डू बना ले हमारे पास जो नारियल का बुरादा बचा हुआ है उस में लड्डू लपेटकर रखें तथा ऊपर से काजू यह बादाम चिपका दें ताकि देखने में सुंदर लगे लो तैयार हो गए मूंग की दाल के लड्डू ना दाल भिगोना है ना दाल पीसना है आप जब चाहे जब इसे तुरंत तैयार कर सकती हैं बहनों एक बार जरूर बनाना फिर बताना खाने में कितने स्वादिष्ट हैं।

\*\*\*

### सूजी के पेड़े

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

बहनों हम सब यह बात बहुत अच्छी तरह से जानते कि बाजार में इस समय मावा मिलावटी मिलता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

दीपावली का त्योहार पांच दिवसीय होता है इन 5 दिनों में हम विभिन्न प्रकार के व्यंजन अपने घरवालों को बनाकर खिला सकते लीजिए प्रेम और स्नेह से पर पूर्ण पेड़े

**सामग्री :** 1 कटोरी सूजी,

घी आधा कटोरी,

शक्कर पिसी आधा कटोरी

दूध एक कप

**विधि -:** सूजी को कढ़ाई में डालें तथा साथ में आधा कटोरी धीजो आपके पास है वह भी डाल कर उसे भून ले जब हमारी सूजी भून जाए तभी उसमें दूध डाल दे तथा उसे लगातार चलाती जाएं ताकि उसमें किसी प्रकार की गठान ना पड़े जब सूजी फुल कर कढ़ाई छोड़ने लगे उसी समय उसे एक थाली में निकाल ले तथा थोड़ी देर ठंडा होने दें बिल्कुल ठंडा ना करें जब वह गुनगुनी हो उसी समय पिसी शक्कर उसमें डालें तथा हाथ से अच्छी तरह से मसले ताकि शक्कर उसमें एक रस हो जाए शक्कर मिलाने के बाद आप छोटी इलायची पिसी हुई थोड़ी सी डाल दें तथा उसके गोल गोल पेड़े बनाएं पेड़े को बीच में हाथ से थोड़ा दबाएं तथा बीच में एक बादाम या किशमिश रख दें नारियल के बुरादे में लपेट कर रखती जाएं लो तैयार हो गए सूजी के पेड़े।

\*\*\*

### सूजी से बने पानी के गोल गप्पे

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

पानी की फुलकी को देख कर मचलना तथा खाने की जिद करना यह बात हम सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं बाजार



## चतुर्वेदी चन्द्रिका

की बनी हुई पानी की फुलकी किस तरह से बनाई जाती है तथा पानी को स्वादिष्ट करने के लिए आम के पने के स्थान पर टाटरी का प्रयोग होता है पानी हरा दिखाई पड़े इसलिए पोदीना ने के स्थान पर खाने का हरा रंग मिला देते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है लो झटपट बना लो घर में पानी की फुलकी और पेट भर खिला दो बच्चों को।



एक कटोरी रवा लो या अपनी इच्छा अनुसार जितनी फुलकी बनाना चाहो उस रवे में दो चम्मच तेल डालें और उसे हाथ से अच्छी तरह से मिला लें। यदि रवा 200 ग्राम करीब है तो चौथाई कप तेल पड़ेगा। दोनों हाथों से अच्छी तरह से उस रवे में तेल को मिला दे हल्का गुनगुना पानी डालकर उसको गूथ ले आटा ज्यादा कराना रखें रोटी जैसा रहे हाथ से मसलकर चिकना करें तथा 20 25 मिनट के लिए ढककर रख दें।

गैस पर कढ़ाई चढ़ाएं उचित तलने के लिए तेल डाल दे तथा गैस को सिम पर कर दें ताकि धीरे धीरे गर्म होता रहे ढके हुए आटे को निकाले हाथ से उसे और अच्छी तरह से मसले और एकदम चिकना कर ले छोटी छोटी लोहिया तोड़कर लंबी फुल की बेल ले फुलकी ज्यादा पतली ना करें और ना एक साथ ढेर सारी बनाकर रखें 1520 फुलकी बनाने के बाद उसे तेज आज पर तले फुल किल डालते जाएं और वह फूलती जाएगी जितना कढ़ाई में स्थान है उतनी फुलकी डालें जब एक तरफ से अच्छी तरह से सीख जाए तब पलट दे गैस को धीमे कर कर थोड़ी देर तले और फिर उसे निकालने और किसी ऐसे बर्तन में रखें ताकि उसका अतिरिक्त तेल निकल जाए इसी तरह सारी फुलकी बना ले लो तैयार हो गई करारी करारी फुल की फुलकी का पानी है तैयार करें

आप कच्चे आम का मौसम में उसका पना निकाले हरा धनिया पोदीना थोड़ा जीरा थोड़ी अजमाइन चाट मसाला काला नमक सादा नमक हरी मिर्च सभी मसालों को पीसकर पानी तैयार करें और पानी को ठंडा करने के लिए वर्फ थोड़ी सी डाल दें तैयार पानी में आपकी इच्छा हो तो थोड़ी सी बूंदी डाल दें फुलकी में आलू या मटर भरें और पानी से भरकर खिलाई।

\*\*\*

### कच्चे केले के चटपटे चिप्स

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

सामग्री : कच्चे केले इच्छा अनुसार

तलने के लिए तेल

नमक तथा दो चम्मच हल्दी

**विधि :** आपके पास जो कच्चे केले हैं पहले उन्हें छील ले उसके ऊपर का हरा कवर हटा दे उसके बाद एक किसी बर्तन में पानी ले उसमें दो चम्मच नमक यदि फलाहारी बनाने हैं तो सेंधा नमक तथा एक चम्मच हल्दी डाल दें फलारी बनाने हैं तो हल्दी ना डालें अब उन छिले हुए केले को उस पानी में चाकू से बारीक बारीक एकदम पतले पतले गोल चिप्स काटे और पानी में डालती जाए जब सारे केले के चिप्स बन जाए तो उन्हें करीब आधा घंटे के लिए रख दें आधा घंटे के बाद उन केले के चिप्स को चलनी में निकालें ताकि उसका पानी निकल जाए तथा उन चिप्स को एक एक अलग-अलग फैलाकर हवा में रख दें ताकि उनकी एक्स्ट्रा नमी निकल जाए हाथ लगा कर देखें यदि नमी निकल गई और वह सूखे से लगने लगे तब उन्हें तलने की प्रक्रिया प्रारंभ करें कढ़ाई में पहले तेल डालें तथा उसे गर्म करें जब तेल एक बार गर्म हो जाए तब गैस को सिम कर दे ।



केले के चिप्स उसमें तलने के लिए डाल दें मध्यम गैस पर तले जब वह कढ़ाई में बजने लगे समझ लीजिए चिप्स तैयार हो गए और उन्हें बाहर निकाल ले तथा जिस थाली में निकालें उसको जरा सा टेढ़ा कर दे ताकि चिप्स के साथ आया हुआ तेल निकल जाए क्या एक कोई बड़ी छलनी में निकालें ताकि नीचे तेल टपक जाए जब वह थोड़े ठंडे हो जाए तब उसमें अपनी इच्छा अनुसार काली मिर्च चाट का मसाला हल्का काला नमक क्योंकि पहले से ही वह नमकीन है यदि बहुत चटपटा खाना चाहते हैं तो आप लाल मिर्च भी डाल सकते हैं लो तैयार हो गए केले के चिप्स।

\*\*\*

### रसगुल्ला ब्रेड के

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

बहनों रसगुल्ला का नाम आते ही मुंह में पानी आ जाता है रसगुल्ले भी कई तरह से बनाए जाते हैं आज हम आपको ब्रेड के रसगुल्ले बनाना बताएंगे बहुत सॉफ्ट और बनाना भी बहुत आसान सारी सामग्री घर में ही उपलब्ध है।

सामग्री : ताजी ब्रेड के 5 या 6 पीस

आधा कप दूध, शक्कर,

तलने के लिए अथवा तेल

थोड़ी सी में मेवा

**विधी:** सबसे पहले हमारे पास जो ब्रेड हैं उनके किनारे के लाल-लाल पीस निकाल दें और उन ब्रेड के छोटे-छोटे टुकड़े कर ले अब उस ब्रेड में हमारे पास जो दूध है हल्का गुनगुना उसे थोड़ा थोड़ा करके डालें और हाथ से मसल कर डो बनाएं यदि एक साथ दूध डालेंगे तो दूध ज्यादा भी पड़



सकता है डो ढीला हो जाएगा उस डो को हम अच्छी तरह से मसल ले तथा 15 मिनट के लिए रख दे। अब हमारे पास जो शक्कर है उसको कढ़ाई में डालें

तथा थोड़ा सा पानी डालें जब शक्कर पूरी तरह से खुल जाए उसके बाद 1 मिनट और पकाएं हमें चासनी नहीं बनानी और चासनी को उतार कर दे अब कढ़ाई को चढ़ाएं तथा उसमें इच्छा अनुसार धी अथवा बाइटल तेल डालें जब वह गर्म हो जाए तब गैस सिम कर दे डो को निकालें एक बार और। ताकि

वह चिकना हो जाए अब उसकी गोल गोल गोली बनाएं और उस गोली में बीच में एक किशमिश रख दें उसके बाद चारों तरफ से बंद करके फिर गोल गोल गोला बना ले ध्यान रखें कहीं से वह खुला ना हो उसको अच्छी तरह से चिकनी तरह से गोल बनाएं इसी तरह से सारे रसगुल्ले बना बना कर रखें थोड़ा सा ब्रेड डालके देखें। यदि वह ऊपर आ जाए।

तो तेल तैयार है अब उसमें वह बोले डाल दें गैस सिम करें ताकि वह अच्छी तरह से अंदर से सीख जाए जब वह गुलाबी गुलाबी हो जाए तब मध्यम गैस पर थोड़ा तले बहुत ज्यादा लाल ना करें अब इन्हें निकाल कर रख ले चासनी हमारी ठंडी हो गई होगी चासनी को दोबारा गैस पर रखें और उसमें सभी तले हुए वह रसगुल्ले डाल दे चासनी को गर्म करें करीब 1 मिनट जब खोलजाए तब बंद कर दे तब उन्हें चासनी से निकाल प्लेट में सजाएं तथा ऊपर से कटा हुआ मेवा डाल दे तैयार हैं हमारे रसगुल्ले।

जैसा कि आप सभी को विदित है कि डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, सभापति, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने 2020 में महासभा की सहायतार्थ तथा आर्थिक स्वावलम्बन के लिए एक अनूठी गुल्लक योजना का शुभारम्भ किया था। इस के माध्यम से कामधेनु की पर्याय गाय की प्रतिकृति क्री एक गुल्लक सभी बांधवों को प्रति परिवार एक के हिसाब दी गयी थी।

इस गुल्लक में बांधवों द्वारा पूजा में चढ़ाए पैसे, उठाऊने के पैसे, भगवान के लिए निकाल कर पैसे आदि आदि अवसरों पर थोड़ी थोड़ी मात्रा में एकत्र की गयी धन राशि को संग्रहित कर मकर संक्रांति (जनवरी मास) तथा दुर्गा पूजा के समय महासभा के अकाउंट में सीधे जमा करने का आग्रह किया गया था।

इसी श्रृंखला में दुर्गा पूजा के समापन पर महासभा को प्राप्त धन राशि निम्न प्रकार से है :-

1. डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, दिल्ली - 2100/-
2. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, भोपाल - 1001/-
3. श्री धीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी, कानपुर - 1180/-
4. श्री भरत कुमार चतुर्वेदी, रिषड़ा - 1000/-
5. श्री पदम कुमार चतुर्वेदी, लखनऊ - 1000/-
6. श्री अभयराज चतुर्वेदी, गुरुग्राम - 1000/-
7. संजय मिश्रा, कानपुर. - 1001/-
8. श्रीमती रुषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल - 1000/-
9. श्री अखिलेश चतुर्वेदी, लखनऊ - 2060/-
10. श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी, कासगंज - 1000/-

### अपील

12. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी, दिल्ली - 3100/-

13. विशाल चतुर्वेदी, पुरा - 1001/-
14. श्री दिलीप चतुर्वेदी, लखनऊ 500/-
15. श्री ललित चतुर्वेदी, लखनऊ 2000/-
16. श्री विपिन चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
17. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया - 1100/-
18. श्री प्रदीप चतुर्वेदी, आगरा - 500/-
19. श्री पुनीत चतुर्वेदी, आगरा - 500/-
20. श्री आशुतोष चतुर्वेदी चतुर्वेदी, कानपुर - 1150
21. श्री रोमित चतुर्वेदी, कानपुर - 550/-
22. श्री भारत चतुर्वेदी, कानपुर - 550/-
23. श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा - 1470/-
24. प्रदीप चतुर्वेदी (संजू), गाज़ियाबाद - 1000/-
25. श्री कमलेश चन्द्र पांडे, नोयडा - 1100/-
26. श्री नील कमल चतुर्वेदी, कोलकाता - 2500/-

कुल जमा राशि = 30,363/-  
आप से निवेदन है कि महासभा के account में गुल्लक योजना की राशि जमा कर कृतार्थ करे।

Account विवरण :- श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा  
Account no : 1006238340  
IFSC CODE : CBIN0283533  
Branch : Central bank of India  
Anand Vihar Delhi  
निवेदक : मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री



## स्व. श्री राकेश चंद्र चतुर्वेदी

हमारे प्रिय फूफाजी

राकेश चन्द्र चतुर्वेदी जी का जन्म 4 जुलाई 1950 भरतपुर में स्वर्गीय चक्खन लाल जी और स्वर्गीय सरला चतुर्वेदी के यहाँ हुआ। फूफाजी बहुत शांत स्वभाव के थे। उनके चेहरे पर सदैव समभाव रहते थे। हल्की मुस्कराहट उनके चेहरे पर होती थी, जो कि उनकी पहचान थी।

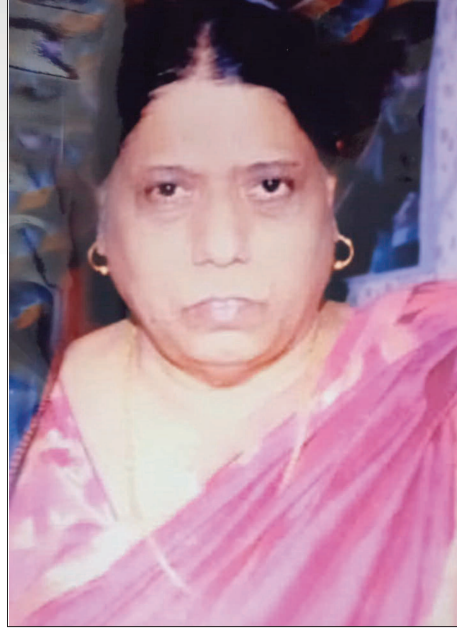
राकेश जी का विवाह मेरी बुआ कुमुद मिश्रा (अजमेर) से हुआ था। हमने प्रारंभ से ही फूफाजी को शांत और सरल स्वभाव का देखा। उनको ऊँची आवाज़ में बोलते हुए कभी नहीं सुना। बिना आवाज़ ऊँची किए अपनी बात को स्पष्ट रूप में रखते थे। फूफाजी कोषागार (ट्रेज़री), अजमेर में रहते हुए उन्होंने कार्य को हमेशा ईमानदारी और निर्भीकता के साथ किया। वे किसी भी अधिकारी के दबाव में नहीं आते थे। अपने पद पर रहते हुए उन्होंने बहुत से मजबूर लोगों की मदद की। फिर चाहे वो उनके जानकार थे या नहीं। उनके व्यक्तित्व से उनके पद और उनके आयाम का कभी भी अहसास नहीं हुआ। कदाचित सादा जीवन ही उनके जीवन का आधार था जो उनके व्यवहार में परिलक्षित होता था।

फूफाजी सभी रिश्तेदारों से अंत समय तक जुड़े रहे। अधिकतर वे सभी रिश्तेदारों के शुभ मांगलिक कार्यों में ही नहीं शोकपूर्ण कार्यक्रमों में भी उपस्थित रहते। फिर चाहे उन्हें कितनी भी दूरी की यात्रा करनी पड़े। लेकिन रिश्तेदारों और बाधवों से जुड़े रहना उन्हें पसन्द था। फूफाजी अपने परिवार से अत्यधिक स्नेह करते थे न केवल अपने भाइयों से बल्कि परिवार के सभी बच्चों से उनका स्नेह प्रगाढ़ था। सभी से जुड़े रहना और उनके फोन कर हाल-चाल जानना उनके दैनिक कार्यों में से एक था। उनके जाने का विश्वास नहीं होने का कारण यही था क्योंकि एक दिन पहले ही उन्होंने सभी बान्धवों की कुशल क्षेम जाना। दूसरे दिन का सूरज यह दुखद समाचार लाएगा। किसी ने भी सपने में नहीं सोचा था कि फूफाजी इतनी शांति से अपनी यात्रा पूरी करेंगे। 9 दिसंबर के दिन जब यह दुखद समाचार मिला तो कोई भी एकाएक यकीन नहीं कर पाया।

उनके जाने के बाद वे सभी जिनको उन्होंने अपने प्रेम और नेह से बाधा हुआ था। उनकी कमी को कोई भी नहीं भर पायेगा। यह खाली स्थान हमेशा याद दिलाएगा कि रिश्तेदारों से जुड़े रहने की नसीहत दी नहीं जाती उसे मिल कर, उनके सुख-दुख में खड़े हो कर निभाते हैं।

प्रणाम  
सुवर्चा चतुर्वेदी

र.क्र.-2021/691



## स्व. सुश्री सुमन मिश्रा

फूलों सी मुस्कराती - सुमन

काशी भवन परिवार के स्वर्गीय जोगेंद्र नाथ जी और स्वर्गीय मालती देवी मिश्रा (मिसरा) की सबसे छोटी पुत्री सुमन मिसरा (निम्मी जी) का जन्म 15 अप्रैल 1952 को हुआ। बचपन से ही उनकी तेज बुद्धि का परिचय मिलता रहा। विद्यालय की शिक्षा के उपरांत जल्दी ही आत्मनिर्भर हो गईं। सरकारी विभाग आयुर्वेद में उनकी नियुक्ति हुई। बड़े अधिकारियों अथवा सहकर्मी सभी के साथ मधुर संबंध रहे। कार्यालय में उनके समय पर आने और जाने से सभी सहकर्मी उन्हें दीवार घड़ी बुलाते थे। उनका नाम किसी के परिचय का मोहताज नहीं था। घर से लेकर ऑफिस तक, सरकारी सेवा के कार्यकाल से लेकर सेवोपरांत तक और सेवोपरांत से मृत्यु तक उनका जीवन विशिष्टता का एक साक्ष्य था। उनके जाने के चार वर्ष पश्चात भी उनकी कमी को हम सभी शिद्दत से महसूस करते हैं। वैसे तो उनकी यादें प्रति पल सभी निकट संबंधियों के हृदय में रहती हैं। न केवल हम लोग उनको याद करते हैं बल्कि वे लोग जो उनसे एक बार मिल चुके थे वे भी उनकी विशेषताओं को याद करते हैं। उनके हाथ में जादू था वह जितनी कुशलता के साथ खाना पकाती थी। उतने ही मनुहार के साथ खिलती भी थीं। न केवल उनके बनाए खाने के लिए, बल्कि प्रेम के साथ भावपूर्ण तरीके से खिलाने के अनुग्रह को भी सभी याद करते हैं। माँ अत्रपूर्णा का उन पर आशीर्वाद प्रत्यक्ष रूप में परिलक्षित होता था। हम सभी रक्त संबंधी जिनका अजमेर के साथ लंबा रिश्ता जुड़ा रहा। अजमेर की सीमा के प्रारंभ होते ही विशेष अनुराग से भर जाते हैं। अजमेर में सर्किट हाउस के सामने वह क्वार्टर अपनी जीवंतता के साथ हम सभी के दिलों में अडिग खड़ा हुआ है। वह इतना महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि हमने उस समय में बचपन के श्रेष्ठ समय को बिताया। हम बच्चों को उनका सानिध्य और स्नेह मिला। हम सभी बुआ जी की निर्भीकता और हाजिर जवाबी से परिचित हैं। तेज दिमाग और निर्भीकता उनके प्रत्येक कार्य में दिखती थी। घर के सभी बच्चों से अथाह लगाव था। सभी बच्चे क्वार्टर पर इकट्ठा हो जाते और वो उतने ही उत्साह के साथ सभी को घुमाने, फिल्म दिखाने ले जाती थीं। सबके मनोरंजन और शौक का पूरा ध्यान रखने वाली हमारी प्रिय बुआ सब के बीच में रहकर अपनी खुशियों को पाती थीं। किसी भी व्यक्ति के जाने से अपूर्णीय क्षति होती है। उस क्षति को उनके जाने के बाद हम अनुभव कर रहे हैं। 29 अक्टूबर के दिन वो हम सभी से दूर हो गईं। उनकी चौबरसी करीब है और हम अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि उनको अर्पित करते हैं। आप सदा से हमारे दिलों में थीं और आगे भी आपके साथ बिताए हुए समय को यकीनन कोई भी नहीं भुला पाएगा।

प्रणाम  
सुवर्चा चतुर्वेदी

र.क्र.-2021/691

#### नवरात्र - लांगुरिया गायन

दिनांक 9 अक्टूबर 2021 को राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ, महासभा एवं भोपाल चतुर्वेदी महिला समूह गुइयाँ के संयुक्त तत्वाधान में एक लुप्त होती जा रही गायन शैली को प्रोत्साहित करने हेतु लांगुरिया गायन का कार्यक्रम ऑनलाईन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति आदरणीय डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी थे। इस कार्यक्रम में महासभा के सचिव आ. मुनीन्द्र जी, महेश जी, ज्ञानेंद्र जी, महासभा के संरक्षक आ. भरत जी व चतुर्वेदी चन्द्रिका पत्रिका के संपादक शशांक जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि सभापित प्रदीप जी व अन्य आमंत्रित अतिथियों को का मंच पर आसन ग्रहण कराया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी द्वारा दीप प्रज्वलन एवं मातारानी व कुलदेवियों माल्यार्पण के चित्र पर माल्यार्पण कर की गई। इसके बाद मंगलाचरण श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी, दिल्ली द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप जी व अन्य अतिथियों का स्वागत व अभिनन्दन ऊषा जी, शिवांगी जी, शारदा जी, शिविका जी द्वारा किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी ने आज के कार्यक्रम की आवश्यकता, रूपरेखा पर प्रकाश डालते सभी का स्वागत व अभिनन्दन किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि प्रदीप जी का मार्गदर्शन करते हुए प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया व कहा कि इस तरह पहली बार लांगुरिया का कार्यक्रम आयोजित हुआ है।

सर्वप्रथम शशि जी ज्वालापुर ने दुर्गा कवच से महौल को भक्ति मय बना दिया। कु. चारु चतुर्वेदी अटलाटा (यू.एस.ए) ने बांसुरी पर मधुर व मनभावना प्रस्तुति दी। तत्पश्चात इंदू जी (नोएडा), प्रीति जी (सिवनी), विनीता जी (देहरादून), वर्षा जी, चित्रा चतुर्वेदी (भोपाल), अनुपमा जी (दिल्ली), संचिता जी (साहिबाबाद), वंदना जी (नासिक), नेहा जी (लखनऊ), विनीता चतुर्वेदी (भोपाल), नीमा जी (मुंबई), मिथिलेश जी (जयपुर), ज्योति जी चतुर्वेदी (यू.एस.ए), पदमरेखा जी (भोपाल), स्वाति जी (रामगढ़), कु. निष्ठा (हैदराबाद), करुणा जी (मथुरा), अलका जी (लखनऊ), गुंजन जी (साहिबाबाद), अपर्णा जी (बुलंदशहर), आभा जी (दिल्ली), वंदना जी (मैनपुरी), शशि जी (ज्वालापुर), रक्षा जी (भिवानी), गार्गी जी (भोपाल) शिल्पी जी (कोलकाता), ऊषा जी (भोपाल) ने लांगुरिया माता के भजन प्रस्तुत किये। अंत में अनीता जी (नोयडा) की माता की आरती के साथ भजन संध्या का

समापन हुआ। इसमें विशेष बात यह थी कि आरती गाते सभी बहनें अपने हाथों में दीपक लिए हुए थीं। आरती में महासभा के पूर्व सभापति कमलेश जी ने भाग लिया।

कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम की सह - संयोजिका श्रीमती शिवांगी जी द्वारा अतिथियों, प्रतिभागियों व समाज की बहनों बांधवों का आभार प्रदर्शन किया गया।

- शिवांगी चतुर्वेदी, भोपाल

000

भोपाल

भोपाल दिनांक 2 अक्टूबर 2021 को श्री माथुर चतुर्वेदी



सभा, शाखा भोपाल की कार्यकारिणी की बैठक सभा के संरक्षक विकास जी के निवास पर संपन्न हुई। बैठक में सर्वश्री भरत चतुर्वेदी (पूर्व सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा) श्री शशांक चतुर्वेदी (संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका), अनिल जी, बीनू जी, प्रशांत जी, ललित जी, श्रीमती अलका जी, सुभाष जी, सुमंत जी, हरीश जी उपस्थित हुए। आप सभी सम्मानित कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति में विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। इस वर्ष समाज की ओर से गणेश उत्सव मनाया गया। जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभागी महिला एवं बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यकारिणी के सदस्यों ने कार्यक्रम की प्रशंसा की। दूसरा एवं महत्वपूर्ण विषय रहा भोपाल चतुर्वेदी समाज एकीकरण का, इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। सम्माननीय सदस्यों का मत रहा कि यदि समाज के कतिपय प्रबुद्ध जन समाज की एकता में बाधा है तो इसकी कीमत बाकी समाज अलग-अलग कार्यक्रम कर, अलग-अलग रह कर क्यों चुकाए। इस विषय पर समाज के सभी प्रबुद्ध जनों को सोचना चाहिए विशेषकर महिला शक्ति को। समाज की प्रबुद्ध महिलाएं चाहें तो भोपाल चतुर्वेदी समाज को सशक्त तरीके से एक करने का प्रयास कर सकती हैं। मैं भोपाल चतुर्वेदी समाज के सभी प्रबुद्ध लोगो के विचार इस विषय पर जानना चाहता हूँ। सब आगे बढ़कर प्रयास करेंगे तो परिणाम अच्छा होगा बैठक में आय-व्यय की जानकारी कोषाध्यक्ष द्वारा दी गई। आगामी

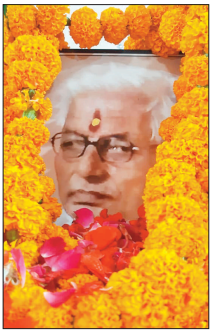
कार्यक्रमों के संबंध में सम्मानीय सदस्यों के सुझावों के अनुसार कार्यक्रम किए जाने पर भी विचार किया गया। इसमें प्रशांत जी, शशांक जी, हरीश जी ने अपने विचार रखे। अंत में संगठन सचिव प्रशांत जी द्वारा आभार प्रदर्शन करते हुए विकास जी व सपना जी को अच्छे आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

- सुरेंद्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष

000

### कानपुर

श्री विजय शंकर चतुर्वेदी जो कक्का के नाम से प्रसिद्ध थे तथा वर्तमान में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के अध्यक्ष थे का स्वर्गवास दिनांक 22 सितंबर 2021 को हो गया। उसके



संबंध में एक श्रद्धांजलि सभा दिनांक 10 अक्टूबर 2021 को बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी सार्वजनिक धर्मशाला, कानपुर में की गई। स्व. विजय शंकर जी को कानपुर सभा एवं समाज के गणमान्य बांधवों के अतिरिक्त श्री दीपक कोठारी पान पराग के मालिक तथा विकास जी, चुन्ना भैया ने भी श्रद्धांजलि सभा में स्व. कक्का को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। स्व. कक्का की श्रद्धांजलि सभा में कानपुर समाज के गणमान्य बांधव एवं कार्यकारिणी के सदस्य तथा पदाधिकारी मौजूद रहे। स्व. कक्का कानपुर समाज के एक निष्ठावान व्यक्तित्व के रूप में व बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला, कानपुर के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद किया जाता रहेगा। आ. कक्का पांच विषयों में स्नातकोत्तर तथा उद्योग निदेशालय से सेवानिवृत्ति थे तथा वॉलीबॉल के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी रहे। श्रद्धांजलि सभा के पूर्व कार्यकारिणी की बैठक आहूत की गई थी। जिसमें आदरणीय कक्का के स्वर्गवास के उपरांत श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर कैसे आगे कार्य करेगी इस पर चर्चा हुई। जैसे तो सभा के संविधान में भी व्यवस्था है। फिर भी कार्यकारिणी में सर्व सहमति के आधार पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सत्येंद्र चतुर्वेदी (कछपुरा/कानपुर) शेष अवधि के लिए कार्यकालिक अध्यक्ष रहेंगे।

- प्रवेश चतुर्वेदी, महामंत्री

000

### गुरुग्राम

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम की दिनांक 03-10-2021 को शाम को बैठक श्री प्रणव चतुर्वेदी जी के निवास पर आहूत की गयी। बैठक में अनेक विषयों पर चर्चा हुई। प्रणव जी ने

सर्वप्रथम दिनांक 26-09-21 (रविवार) को आहूत विगत बैठक की कार्यवृत्त को पढ़कर सुनाया। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम के वर्तमान अध्यक्ष मनोरंजन जी के असमय स्वर्गवास के कारण हुये रिक्त पद की पूर्ति के लिए गुरुग्राम संविधान क्रमांक 8.11 अध्यक्ष की अनुपस्थिति में, अध्यक्ष के सभी कार्य का सम्पादन उपाध्यक्ष जी के द्वारा के अनुसार अभय राज ने वर्तमान उपाध्यक्ष अखिलेश जी के नाम का प्रस्ताव रखा तथा इसका अनुमोदन प्रणव जी व उपस्थित सभी सदस्यों ने एकमत से समर्थन किया। जिसे वर्तमान उपाध्यक्ष श्री अखिलेश जी ने सभी का अनुरोध गुरुग्राम संविधान अनुरूप स्वीकार किया। बाकी कार्यकारिणी यथावत रहेगी। दिनांक 26-09-21 (रविवार) को देवेन्द्र जी के निवास पर आहूत बैठक की चर्चा को दोबारा चर्चा में लाया गया कि दिल्ली की नव निर्वाचित सभा के अध्यक्ष द्वारा गुरुग्राम सभा का दिल्ली सभा में विलय का मौखिक प्रस्ताव बैठक में सभी उपस्थित सदस्यों ने एकमत से दोबारा खारिज कर दिया। लेकिन उनके द्वारा आयोजित सभी सामाजिक कार्यक्रमों में प्राथमिकता अनुसार उपस्थिति अवश्य होने का प्रयास किया करेंगे। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने 28 नवंबर 2021 को दीप मिलन समारोह GIA हाउस होने को प्रास्तावित किया था। जिसका निर्णय समय व परिस्थिति के अनुसार आगामी बैठक में चर्चा कर निर्णय लेना भी प्रस्तावित रहेगा। पूर्व बैठक में अनुराग जी और प्रणव जी ने समाज की गढ़ना और नए सदस्यों को जोड़ने पर जोर दिया के अनुसरण करते हुये सुदर्शन जी मैनपुरी को सक्रिय सदस्य के रूप में सभी उपस्थित सदस्यों ने स्वागत किया। सुसुप्त सदस्यों को समाज के प्रति सक्रिय करने के लिए सतत संपर्क पर जोर दिया। नव निर्वाचित अध्यक्ष अखिलेश चतुर्वेदी जी ने सभी सदस्यों का धन्यबयाद प्रेषित किया व अपने विचार प्रकट करते हुये सभी से अनुरोध किया कि सदस्य अपनी बात रखते हुये सम्मान जनक शब्दों के चयन पर जोर दिया। सभी सदस्य एक दूसरे का सम्मान करें। चर्चा के समय आपस में मतभेद हो सकते है, पर मनभेद को स्थान नहीं देने पर जोर दिया। सभी सदस्यों को अपनी बात खुल कर रखने की बात कही। जिसे सभी उपस्थित सदस्यों ने अपनी सहमति जताई व आगामी बैठक दिसंबर में आहूत की जाएगी। जिसका समय और स्थान की सूचना जल्द प्रेषित कर दी जाएगी। सुंदर आयोजन के लिए श्री प्रणव जी का सभी सदस्यों द्वारा आभार व्यक्त किया गया। बैठक में सर्वश्री अभय जी बिट्टू भाईसाहब, पंकज जी, अखिलेश जी, नीरज जी, मनोज जी, नीलकांत जी, प्रणव जी, अभयराज जी, सुदर्शन जी, श्रीमति शिप्रा जी, पूनम जी, नीतिका जी शामिल हुये।

- अभय राज चतुर्वेदी, सचिव

# नवंबर माह अच्छी-बुरी घटनाओं का गवाह

- इंजी शिखर चतुर्वेदी, इटावा

वैसे तो साल में 12 महीने होते हैं और उन सभी का अपना महत्व होता है। सभी महीनों अपने अन्दर कुछ ना कुछ सहेजे हुए होते हैं। उन्हीं में नवंबर का महीना भी है जो बहुत कुछ अपने अन्दर समेटे हुए है। यह महीना धार्मिक रूप, ऐतिहासिक रूप से तथा व्यक्तिगत रूप से बहुत बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। वैसे यह साल का 11 वां महीना है। यह साल के साथ इतिहास पन्नों में है। हमारे देश की कई महान विभूतियों ने नवंबर के महीने जन्म लिया है। 11 नवंबर को ही इस दिन चार देशों को आजादी मिली। हमारे देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम की जयंती 11 नवंबर को ही होती है। जिसे हम राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाते हैं। इसी दिन परमाणु वैज्ञानिक अनिल काकोडकर का भी जन्म हुआ था तथा प्रसिद्ध भारतीय क्रांतिकारी और राजनीतिज्ञ जे.बी. कृपलानी जी का हैदराबाद सिंध में जन्म भी हुआ था। इसी महीने में हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी का जन्म भी हुआ था। जिसको हम बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। यह तो हम महान विभूतियों के जन्म के बारे में जानेंगे। परंतु इस माह का महत्व राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जब हमारा देश आजाद हुआ था तो आजादी मिलते ही देश को चलाने के लिए संविधान बनाने की दिशा में काम शुरू कर दिया गया। 29 अगस्त को 1947 को भारतीय संविधान के निर्माण के लिए जो प्रारूप समिति की स्थापना की गई तो इसके अध्यक्ष के रूप में डॉ. भीमराव अंबेडकर को जिम्मेदारी दी गई। डॉ. अंबेडकर ने भारतीय संविधान का मसौदा तैयार किया। 26 नवंबर 1949 को इसे भारतीय संविधान सभा इसे अपनाया। इसी कारण देश में प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को हम संविधान दिवस के रूप में मनाते हैं। यह तो इस महीने का राजनीतिक

महत्व हुआ। अब हम इस महीने का धार्मिक महत्व भी जानेंगे।

इस महीने हम कई त्यौहार भी मनाते हैं जो धार्मिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वैसे इस माह को पर्वों का महीना भी कहा जाय तो अतिशयोक्ति ना होगी। इस महीने में करवाचौथ से माह शुरू होकर यह छठ पर्व पर खत्म होता है। प्रकाशवर्ष दीपावली भी इसी महीने में मनाया जाता है जो सनातन धर्म का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। यह पर्व कई मायनों में महत्व रखता है। इस दिन भगवान श्रीराम 14 वर्ष के वनवास के बाद तथा लंका पर विजय प्राप्त कर के अयोध्या वापस आए थे। इसी खुशी में अयोध्या वासियों ने अपने घरों में घी के दिए जलाए थे। जिस कारण हम प्रत्येक वर्ष अपने घरों में खुशी का इजहार करते हैं। इसके अलावा भी नवंबर महीना देश में सर्वाधिक 9 राज्यों के जन्मोत्सवों के उपलक्ष्य में दिए जलाकर भी जगमगाता है। इसी महीने की पहली तारीख को देश के दूसरे सबसे बड़े राज्य मध्य प्रदेश सहित सात राज्यों का स्थापना दिवस भी मनाया जाता है। इस प्रकार से नवंबर माह का हमने धार्मिक, राजनैतिक सामाजिक महत्व भी जाना है। वैसे नवंबर का महीना कैलेंडर से अति महत्वपूर्ण है। नवंबर दक्षिणी गोलार्ध में देर से वसंत का महीना भी है और उत्तरी गोलार्ध में देर से शरद ऋतु का। इसलिए, दक्षिणी गोलार्ध में नवंबर उत्तरी गोलार्ध में मई के मौसमी समकक्ष भी है और इसके विपरीत भी नवंबर माह एंग्लो-सैक्सन द्वारा ब्लैट मैन् के रूप में संदर्भित किया गया था। इस तरह से हमने जाना है कि नवंबर माह धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टि से कितना महत्वपूर्ण महीना है। हम इस पर पूर्ण लगाते हुए निम्न पंक्तियों पर खत्म करता हूँ कि

धर्मवीर भारती जी के अनुसार -

अपने हलके फुलके उड़ते स्पर्शी से मुझको छू जाती है,  
जापेट के पीले पल्ले-सी यह दोपहर नवंबर की।  
भीगे केशों में उलझे होंगे थके पंख,  
सेने के हंसो-सी धूप यह नवंबर की।।

### समाज समाचार

- \* चि. शांतनु चतुर्वेदी सुपुत्र श्री प्रदीप चतुर्वेदी संजू (पुरा/गाजियाबाद) ने सी. बी. एस.सी. बोर्ड के अंतर्गत 10वीं की परीक्षा 93.6 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।
- \* चि. शिवआशीष चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. चरनेश चतुर्वेदी, श्रीमती सुब्रता चतुर्वेदी (आगरा) ने कंप्यूटर साइंस से एमएमएमयूटी गोरखपुर से इंजीनियरिंग पास की।
- \* चि. सार्थक चतुर्वेदी पुत्र श्री आत्मेश चतुर्वेदी - माशा चतुर्वेदी (नागदा) ने 12वीं की परीक्षा 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। बधाई।
- \* कु. मुस्कान चतुर्वेदी सुपुत्री श्री आलोक चतुर्वेदी (कछपुरा/लखनऊ) ने जिला स्तरीय बेंच प्रेस एवं पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता के अपने वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- \* चि. साहिल चतुर्वेदी पुत्र श्री ब्रन्देश चतुर्वेदी - स्मिता चतुर्वेदी (दिल्ली) ने दसवीं की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। बधाई।



### शोक समाचार

- \* श्री दयाशंकर चतुर्वेदी पुत्र स्व. खरगराम चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) का स्वर्गवास दिनांक 17 अक्टूबर 2021 को कानपुर में हो गया।
- \* श्री मोहनचंद्र चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री ज्वालाप्रसादजी चतुर्वेदी (भवानीमंडी) का स्वर्गवास दिनांक 01/10/2021 को भवानीमंडी में हो गया।
- \* श्रीमती शारदा जी पत्नी स्व. आर. एन. मिश्रा (लखनऊ/उरई) का स्वर्गवास दिनांक 01/10/21 लखनऊ में हो गया।
- \* श्री मुनीन्द्र कुमार चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री शरद चंद्र चतुर्वेदी (इटावा/जबलपुर) का स्वर्गवास दिनांक 21 अक्टूबर 2021 को भोपाल में हो गया।
- \* श्रीमती शोभना जी पत्नी स्व. अमय कृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा का स्वर्गवास 21.10.21 को नोयडा में हो गया।
- \* श्रीमती पार्वती चतुर्वेदी पत्नि स्व. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी (करहल/आगरा) का स्वर्गवास दिनांक 22/10/21 को आगरा में हो गया।
- \* श्रीमती विभा पाण्डे, बीबो स्व. वीरेंद्र नाथ पांडे (चक्रधरपुर/चाईबासा) का स्वर्गवास दिनांक 22.10.21 को चाईबासा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।